चतुर्थ अध्याय

चन्द्रकान्ता के स्त्री पात्र, अस्मिता की तलाश, प्रतिरोध और समस्याएँ

उपन्यासों में चरित्र-चित्रण पात्रों के माध्यम से किया जाता है और प्रत्येक पात्र अपने चारित्रिक गुणों एवं विशेषताओं के साथ-साथ अपने वर्ग और स्तर को प्रतिनिधित्व करते है। बच्चन सिंह के अनुसार, "जीवन और जगत में पाए जानेवाले व्यक्तियों का साहित्य में काल्पनिक प्रस्तुतीकरण चरित्र-चित्रण कहा जाता है।" [1]

जिस प्रकार जीवन और संसार की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ बदलती हैं, उसी प्रकार बदलती परिस्थितियों के अनुसार व्यक्ति का चरित्र भी बदलता है। उपन्यास के प्रत्येक पात्र निर्जीव और चेतन है, जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चे सभी पात्र शामिल हैं। चरित्र से ही पात्रों की विविधता का पता चलता है और प्रत्येक की अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। धरती पर मौजूद हर प्राणी की अपनी अलग-अलग खूबियाँ एवं खामियाँ होती हैं और उनकी ऐसी विशेषताएँ एक को दूसरे से अलग करती हैं। वास्तव में, जो प्राणी चरित्र को आकार देता है वही चरित्र-चित्रण है।

चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों में सभी वर्ग की स्त्रियों के चरित्र चित्रण को बड़ी बारीकियों और खूबसूरती से सजाया है। प्रत्येक पात्र स्त्री की मनोदशा और भावात्मकता के अनुकूल है तथा प्रत्येक पात्र हमारे समाज के ही लगते हैं। पात्रों के चरित्र चित्रण में कथात्मक अनुकूलता, स्वाभाविकता, चारित्रिक सजीवता, यथार्थता, भावात्मक सहृदयता, रचनात्मक मौलिकता, व्यावहारिकता, अंदरद्वन्द्वात्मकता, बौद्धिकता और कलात्मकता आदि विशेषताएँ पाये जाते हैं।

4.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों के विविध रूप

चन्द्रकान्ता द्वारा प्रकाशित सात उपन्यासों में प्रत्येक उपन्यास के स्त्री पात्र अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वत्व केलिए तलाशती हैं। लेखिका ने यहाँ अपने जीवन के परिचित पात्रों के साथ-साथ वास्तविक जीवन या एक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले

काल्पनिक पात्रों को भी उपन्यास में स्थान दिया है। पात्रों में सुख-दुख की मूल अनुभूतियों के साथ-साथ राग-द्वेष की मनोविकार भी होते हैं। उन्होंने वस्तु के अनुरूप समाज से पात्रों का चयन किया है और सभी पात्रों के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व की झलक का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है।

4.1.1 अर्थान्तर

'अर्थान्तर' उपन्यास की नायिका कम्मो एक संस्कार सम्पन्न मध्यवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी शिक्षित स्त्री पात्र है। उपन्यास की पूरी कहानी कम्मो के चारों ओर घूमती है और कम्मो के माध्यम से चन्द्रकान्ता ने एक मध्यवर्गीय परिवार की यथार्थपरक चित्रण किया गया है।

4.1.1.1 कम्मो

कम्मो का विवाह आधुनिक विचारधारा से ओत-प्रोत नव युवक विजय के साथ होता है। अपने भौतिकवादी स्वभाव के कारण विजय को वैवाहिक जीवन में भी सुख-शान्ति नहीं मिलती है और वह अपनी पत्नी कम्मो के प्रति शुष्क एवं रूखा व्यवहार तथा लगातार उपेक्षा वैवाहिक रिश्ते में दीवार खड़ी कर देती है। शादी के कुछ समय बाद, वह बम्बई चला जाता है और अपना व्यवसाय स्थापित करता है। महानगरीय जीवन की चकाचौंध और व्यस्तता में खोकर वह अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए संघर्ष करता है और वह पैसे को ही जीवन की आधारशिला मानता हैं। पैसों के पीछे भागने के कारण वह अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को भूल जाता है और साथ ही अपनी पत्नी कम्मो को घर की सुख-सुविधाओं से ज़्यादा महत्व नहीं देता है। लेखिका विजय के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए लिखती हैं- "विजय ने घर में सभी सामान जुटा दिए थे, सुख-सुविधा की वस्तुएँ। कम्मो उस सुख-सुविधा का अंगमात्र थी जिसका विजय मूड के अनुसार उपयोग करता था।" [2]

शादी के बाद पढ़ी-लिखी कम्मो खुद अपने पति और सास-ससुर की तरफ से होने वाली छोटी-बड़ी घटनाओं को भूलकर अपनी नई ज़िन्दगी को सहज एवं आरामदायक बनाए रखती

है। उसे अपने पति से जो प्यार भरे सम्पूर्ण स्नेह नहीं मिला जिसकी वह हकदार थी; वह आस्तित्वहीनता का बोझ ढोती हुई असहाय जीवन जीती है और स्वयं को अधूरापन महसूस करती है। वह इस कमी को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान बनाए रखने के उद्देश्य से घर से दूर शहर में कॉलेज की प्रवक्ता बन जाती है। फिर भी वह अधूरेपन के दर्द एवं पीड़ा से जूझ रही है। वह इससे उबारने की रास्ता ढूँढ लेती है, लेकिन सब कुछ पाने के बाद भी वह खुश नहीं रही है।

अपने पति विजय के बम्बई चले जाने के बाद, कम्मो को घर में खालीपन और बेकारपन की भावना घेर लेती है। अपने माता-पिता के अनुरोध पर विजय कम्मो को बम्बई ले गये, फिर भी विजय के पास समय न के बराबर था। भले ही वह एक छोटे शहर से बड़े शहर में आ जाती है, फिर भी वह अकेला और उपेक्षित महसूस करती है। उसे अपना अस्तित्व मिटता नज़र आता है और वह मानसिक संघर्ष एवं द्वन्द्व से जूझती रहती है और दोनों के बीच के दाम्पत्य जीवन में सदैव दरारें पड़ जाती हैं। कम्मो कहती है- "एकतरफा व्यवहार दूसरे के लिए हमेशा रोचक नहीं होता।" [3]

कम्मो को उसकी दादी और मामा ने सीता और सावित्री की कहानियाँ सुनाकर बड़ा किया है। मामू उसके लिए आसमान से तारे लाने को भी तैयार हैं। अतः उनका बचपन परियों की कहानियाँ सुनने में ही बीता; "तब कम्मो कहाँ जानती थी कि सुख आकाश में उड़ने वाली परियों के लेख में ही होता है, ज़मीन की औरत तो बेहद खुरदरी ज़िन्दगी जीती है।" [4] यानी उसने कभी नहीं सोचा था कि शादी के बाद वह किसी और की दी हुई ज़िन्दगी जिएगी।

कम्मो के माँ बनने के बाद भी विजय के शुष्क एवं रूखे व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। "उसने कम्मो को अच्छी तरह समझाया कि पत्नी के लिए प्यार जैसी चीज़ों की माँग गुनाह नहीं तो फालतू अवश्य है, क्योंकि उसका अस्तित्व सामाजिकता के निर्वाह के लिए होता है। पति होने के नाते वह उसके लिए सुख-सुविधाएँ तो जुटाता ही है।" [5] इसी बीच में कम्मो प्रशांत नाम के एक शख्स की ओर आकर्षित होने लगती है। लेकिन प्रशांत के

समझाने पर कम्मो ने ऐसा कोई कदम नहीं उठाया, जिस से उसका परिवार टूट जाए। कम्मो खुद को सम्भालने और एक नई ज़िन्दगी शुरू करने की कोशिश करती है, लेकिन विजय कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता- "विजय का परायापन बराबर बढ़ता गया। कम्मो अपने परिचित परिवेश में अजनबी बनती गई।" [6]

विजय हर मामले में कम्मो की उपेक्षा करता रहा और तीखे-कठोर स्वरों में उसका अपमान करता रहा है। कम्मो की इस मनःस्थिति का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती है- "कम्मो इस उत्तर से जलकर राख हो गई थी। अपमान से उसके रोएँ ऐंठने लगे थे। आँखों में घृणा का ज्वार उमड़ पड़ा था। पर विजय को अवकाश कहाँ था? समझने-मानाने का।" [7] विजय अपने दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के बीच खड़ी दीवार को देखकर भी नज़र अंदाज़ करता है और उसे गिराना नहीं चाहता। वह हमेशा अपनी पत्नी कम्मो के अस्तित्व को नकारता रहा और अपने कठोर व्यवहार से उसने कम्मो के जीवन को कष्टदायक एवं असुविधाजनक बना दिया। विजय ने कम्मो से कहा- "मैडम, तुम पहाड़ों की सैर करती क्या यही सोच रही थीं कि पीछे अपना काम-धंधा छोड़कर मियाँ किचन सम्भालने में जुटा होगा।" [8]

कम्मो सोचती है कि इस मानसिक रूप से उत्पीड़ित, दमनकारी औपचारिक दाम्पत्य बन्धन से मुक्त होने का एकमात्र रास्ता 'तलाक' है। लेकिन जब कम्मो को अपने बेटे निपू की याद आती है तो उसे एहसास होता है कि मोक्ष प्राप्त करना पूरी तरह से सम्भव नहीं है। कम्मो हर परिस्थिति से समझौता कर लेती है। उसके भीतर माँ कहलाने वाली पत्नी और स्त्री का रूप एक साथ सक्रिय हो उठता है, जो त्याग और सहनशीलता की याद दिलाता है। एक ओर, कम्मो अपने अस्तित्व को जीवित रखने के लिए छटपटाहट और संघर्ष कर रही है और दूसरी ओर, उसके बेटे निपू और पति विजय को उसकी ज़रूरत का अहसास है। वह हर संघर्षभरित और त्रासदी से ऊपर उठकर अंततः अपने बेटे निपू की पलकों को चूमती है और निर्णय लेती है कि वह एक पत्नी और माँ के रूप में केवल निपू के लिए जिएगी। साथ ही, अगर विजय उसका साथ स्वीकार करता है तो वह उसकी पसन्द-नापसन्द का भी ख्याल रखेगी।

4.1.2 बाकी सब खैरियत है

'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में संस्कारी महिला पात्र पारुल रूढ़ एवं कठोर परम्पराओं से ग्रस्त परिवार में अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाती है। पारुल एक ऐसी स्त्री है जो संयुक्त परिवार की विभिन्न समस्याओं से जूझ रही है। दूसरा पात्र ऋता एक मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार की नई पीढ़ी की लड़की की भूमिका निभाती है। प्राचीन विचारधारा से ओत- प्रोत सास हर बात में बहुओं के विरोध में खड़ी रहती हैं।

4.1.2.1 पारुल

उपन्यास की नायिका बड़ी बहू पारुल आधुनिक संस्कारशील एवं संयुक्त परिवार की रूढ़ परम्पराओं से परेशान होकर संघर्षमय जीवन जीती है। वह अपनी सास के अन्धविश्वासों से जकड़ी व्यक्तित्व के तले पूरी तरह से दब गई है। पारुल अपने सास-ससुर, बच्चों, पति और देवर की सेवा में लीन होकर अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को दमन कर अपना अस्तित्व खो चुकी है। "पारुल सीमाओं की ही बात जानती है। उसके परिवेश ने शुरू से ही उसको सिमटने पर मज़बूर किया है, हज़ारों-हज़ार लक्ष्मण रेखाएँ खींचकर। कोई ताज्जुब नहीं कि एक दिन वह इतनी सिकुड़ जाए कि छोटे-से-कीड़े-मकोड़े में समा जाए और खुद भी खुद को पहचान न सके।"[9]

पारुल कभी भी अपनी पसन्द का घर नहीं बसा पाई। वह हमेशा प्राचीन परम्पराओं और मूल्यों से बन्धी रहीं और पति एवं बच्चे सहित अपने घर के माहौल और परिस्थितियों से संघर्ष करती रहीं। इस वजह से वह ऐसा कोई भी फैसला नहीं ले पा रही थी, जिससे उसके ससुराल वालों को कोई परेशानी हो। हालाँकि पारुल को अपने बच्चों का विद्रोह उचित लगता है, फिर भी वह उन्हें शान्त कर देती है। पारुल अपनी बेटी के बारे में सोच कर कांप उठती थी, "उम्र-भर बड़ों के आगे सिर झुकाकर, एक निर्देशित लीक पर चलने के सिवा उसने किया भी क्या है? अपनी कोई पहचान बना सकी है वह? परम्परा के निर्वाह, घर की झूठी इज़्जत और बुजुर्गों के अहम् को सिर-माथे धरकर वह घर-परिवार की मशीन का एक पुर्ज़ा-मात्र

बनकर ही तो घिसती रही। बेटी से उसने इतना ही कहा, मैंने तो हमेशा अपना कर्तव्य निभाया ऋतु!"[10]

इतनी सेवा और त्याग के बाद भी वह किसी को खुश नहीं कर पाई लेकिन वह अपनी घुटन और मानसिक द्वंद्व से मुक्ति चाहती है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित देवर अनु भी विदेश में रहकर अपनी माँ की सेवा की ज़िम्मेदारी अपनी भाभी के कन्धों पर डाल देते हैं और कहते हैं-

"मेरी तुमसे एक प्रार्थना है, भाभी!"

"प्रार्थना?"

"हाँ, मेरे जाने के बाद मेरी बूढ़ी माँ का बराबर खयाल रखना। उन्हें किसी भी तरह 'इगनोर' न करना...।"[11]

4.1.3 ऐलान गली ज़िन्दा है

कश्मीर की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में प्राचीन और आधुनिक विचारधारा से प्रभावित स्त्री पात्रों का चित्रण किया गया है। एक तरफ जहाँ रत्ना और दिव्या दोनों आधुनिक विचारों वाली साहसी, बुद्धिमान स्त्री पात्र हैं, तो वहीं दूसरी तरफ अरुन्धती पारम्परिक रूढ़ परम्पराओं एवं अनुशासनों का पालन करने वाली महिला हैं। उपन्यास में चित्रित किए गये पात्रों के सम्बन्ध में चन्द्रकान्ता ने लिखा है- "मैंने अपने पात्रों और चयनित सन्दर्भों में मनुष्य की सोच और व्यवहार की द्वन्द्वात्मक गुटठिलता को समझने का प्रयास किया है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास में समस्याओं का कोई हल, कोई निष्कर्ष नहीं, प्रशनाकुलता है। पाठक पात्रों और स्थितियों को अपनी सोच और सह-अनुभवों से जोड़कर निष्कर्ष स्वयं निकालता है, इसके लिए ज़रूरी सूत्र कथा में यहाँ-वहाँ होते हैं। लेखक का निष्कर्ष देना मुझे ठीक नहीं लगता।"[12]

4.1.3.1 अरुन्धती

पुरोहित संसारचंद की पत्नी अरुन्धती का चरित्र प्राचीन रूढ़िवादी मूल्यों से जुड़ा है। वह भूत-प्रेत, जिन्न आदि अन्धविश्वासों में विश्वास करती थी और खुद को धार्मिक एवं पवित्र मानती थी। जब तेल को बघार में मोजा डाल चुकी थी, तो उस समय क्या प्रतिक्रिया हुई यह भी देखने लायक है। “जवा भैया ने तेल बघार में सना मोजा माई को दिखाया तो वह निर्विकार भाव से बोली थी, ‘धोकर सुखाने डाल दो’।”[13]

अरुन्धती एक बहुत ही सच्ची, पवित्र एवं शक्की स्वभाव की स्त्री है। वह गली पर रहने वाली कमली, रत्ना और सतवंत जैसे लोगों से मिलना इनकार करती है, क्योंकि उसके अनुसार उन्हें गली के मर्दों ने सिर चढ़ाया था। जब वह अपने पति से रत्ना की तारीफ़ सुनती है तो एकदम ईर्ष्यालु होकर जल जाती है और कहती है कि ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने उसे जलते हुए चिमटे से छू दिया हो। वह लड़कियों को पढ़ाने के पक्ष में नहीं हैं और साथ ही पुराने रीति- रिवाज़ों और परम्पराओं में अधिक विश्वास रखती हैं और वह कभी भी किसी भी तरह के पारिवारिक एवं सामाजिक बदलाव को स्वीकार नहीं करती।

4.1.3.2 रत्ना

उपन्यास ‘ऐलान गली ज़िन्दा है’ के स्त्री पात्रों में रत्ना का किरदार अहम है। अपने जीवन में कई कठिनाइयों और दुखों का सामना करने के बावजूद रत्ना सांसारिक गतिविधियों से विमुख नहीं होती हैं। वह गली में रहने वाली महिलाओं के बीच बुद्धिमति एवं सक्रिय थी और साथ ही उसके मन में गली के लोगों के प्रति सहानुभूति और प्रेम के साथ-साथ रोष भी था। रत्ना के उन लोगों से नाराज एवं रोष होने का एक मुख्य कारण यह था कि रत्ना ने अपने पति और दो छोटे बेटों का अंतिम संस्कार खुद किया था। संक्रमण या छूत के डर से मोहल्ले के लोग अपने पति-बेटों के अंतिम संस्कार में नहीं आये। इस व्यवहार ने रत्ना को रुला दिया- “जिस दिन पति की लाश घर में बारह घण्टे पड़ी रही और कोई मुहल्लेदार पास न फटका, उसी दिन इस लाजवन्ती ने घूँघट उलट दिया था। अपने घर के आँगन में निकलकर रत्ना गला फाड़कर चिल्लाई थी, बिल्कुल उन्मादिनी-सी! मुहल्ले के शरीफ़ लोगो, मैं

अपने घरवाले की अन्तिम क्रिया के लिए चमारों को बुला रही हूँ। तुम भी सुनो, कहीं तुम्हारा धर्म तुम्हें धिक्कार न दे और कल को तुम लोग मुहल्ले में मेरा रहना मुश्किल न कर दो।" [14]

रत्ना निडर, निस्वार्थ और विनम्र थी और अपना विधवा जीवन अपने ढंग से जीती थी क्योंकि वह अपनी बेटी के लिए जीने को मजबूर या विवश थी। अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उन्होंने दीवान साहब जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति से अपना रिश्ता स्थापित कर लिया। गली- मोहल्ले में उसे चाहने वालों की कोई कमी नहीं थी। रत्ना एक असहाय स्त्री है लेकिन अपने पति और पुत्रों की मृत्यु ने उसे अत्यंत निडर बना दिया और उसे अभी किसी की परवाह नहीं थी। जब अनवर मियां के बेटे सलामे और शुभी की शादी को लेकर सड़क पर बड़ा फ़साद हुआ, तो रत्ना साहसपूर्वक निर्भीकता से अदालत में जाती है और शुभी की सही उम्र बताकर सलामे और शुभी की शादी में मदद करती है।

4.1.3.3 दिव्या

उपन्यास 'एलान गली ज़िन्दा है' में दिव्या ने कई महत्वपूर्ण चरित्रों का चित्रण निभाए हैं। एक शिक्षित एवं ज़िम्मेदार स्त्री होने के नाते वह गाइड का काम बड़ी निर्भीकता के साथ निभाती है और अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को दायित्वपूर्ण होकर पूरा कर देती है। दिव्या का चरित्र यथार्थवादी है और वह अपनी ज़िन्दगी हकीकत की बुनियाद पर अर्थात वास्तविकता के आधार पर जीना चाहती है साथ ही वह किसी भी तरह के बनावटी या दिखावटी कपड़े पहनने के पक्ष में नहीं हैं। वह अवतारे को "दूसरी मुलाकात में ही दिव्या ने उसे उसके साथ एलीफेंटा केव्ज चलने का निमंत्रण दिया। आपके कश्मीर जैसी सुन्दर जगह नहीं है बम्बई, लेकिन फिर भी भारत के कई महानगरों से सुन्दर है। मेरे साथ इसे देखना शायद आपको अच्छा लगे। ....मंजू भाभी, आप इन्हें अपने साथ ले आइए न? लगता है, मेरे साथ चलने में इन्हें संकोच हो रहा है। ....मुझे देखो मंजू भाभी, लड़की होकर भी मुझे किसी तरह का संकोच नहीं होता। अकेली ही कहाँ-कहाँ तो घूमना पड़ता है। दरअसल, गाइड का काम करते तो मैं पक्की प्रोफेशनल हो गई हूँ ....।" [15] वह अवतारे से अपने प्यार का इज़हार

व्यक्त करते हुए साहसपूर्वक होकर निर्भीकता से अपने पूर्व प्रेम विघटन के बारे में बात करती है। इतना ही नहीं, वह अवतारे के गले में बाहें डालकर शारीरिक सम्बन्धों को भी सहज-स्वाभाविक तरीके से स्वीकार करती हैं।

4.1.4 अंतिम साक्ष्य

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्गीय पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है। बिजी, एक सरल और समर्पित गृहिणी, उपन्यास के मुख्य पात्रों में से एक है। कोठेवाली मीना उपन्यास की मुख्य घटना से जुड़ी है। मीना नामक पात्र के अस्त-व्यस्त जीवन का चित्रण करते हुए लेखिका ने अन्य पात्रों का भी सजीव एवं सराहनीय चित्रण किया है।

4.1.4.1 बीजी

बीजी एक मध्यमवर्गीय, सम्पन्न, समर्पित परिवार की सीधी-सादी और घरेलू पत्नी, अचानक एक दिन बेकार हो जाती है जब उसे पता चलता है कि उसके पति ठाकुर प्रताप का मीना के साथ अवैध सम्बन्ध है। लेखिका लिखती है- "बीजी का प्रेरणा स्त्रोत अचानक सूख गया। अपने को महत्वपूर्ण समझते, एक दुर्भाग्य-भरे दिन उन्हें महसूस हुआ कि उनका अपना आदमी उनके अस्तित्व की संज्ञा को नकार गया है। घर की चक्की में चाक की कील की तरह घूमती बीजी को लगा कि वे एकदम फालतू हो गई हैं। यह फालतूपन उन्होनें मन की भीतरी तहों से महसूसा।"[16] रेडियो कलाकार मीना के साथ पति के अवैध रिश्ते के कारण घर में तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है और वह मीना के प्यार में सब कुछ भूल जाता है। "प्रताप ने उसकी खामोश आँखों में सागर की हरहराहट महसूस की। उस पर मीना की तिलिस्म-भरी आवाज़ से वे बिंधकर रह गए।" [17]

जिस औरत को बीजी अपनी बहन मानती थी उसने घर उजाड़ दिया। जब उसका पति ठाकुर प्रताप का मीना के साथ अवैध सम्बन्ध बनाते हुए पकड़ा जाता है तो वह अपने पति से बिछुड़ हो जाती है और मीना को अपने पति के साथ देखकर बीजी के मुँह से बस एक ही

बात निकलती है- "कुछ अस्पष्ट-से बोल उनकी जुबान से निकाल पड़े, उम्र-भर का ज़हर तूने मेरे लिए ही संजो रखा था सर्पिणी!" [18]

अपने पति के व्यवहार से त्रस्त होकर बीजी कुछ नहीं कह सकीं और वह धीरे-धीरे निराशा और मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित होकर अंतर्मुखी हो गईं। संस्कारशील परिवार की बेटी बीजी अपने पति की इस हरकत पर कोई विरोध प्रकट नहीं जता सकी। वह जीवन भर एक व्यस्त कामकाजी औरत के रूप में घर-परिवार को सम्भालती रही और घर या बाहर की कोई दिलचस्पी नहीं ली। बीमारी के कारण वह बिस्तर पर ही पड़ी रहती है और फिर न उठने और ठीक न होने की जिद पर अड़ जाती है। पति प्रताप ने बहुत सेवा की, लेकिन सच तो यह था कि बीजी अब पहले जैसी नहीं रहीं, रोग बढ़ता ही गया। एक दिन मौत ने बीजी को आन्तरिक घुटन और बढ़ती निराशा से हमेशा के लिए मुक्त कर दिया।

4.1.4.2 मीना

उपन्यास 'अंतिम साक्ष्य' के स्त्री पात्र मीना एक रेडियो कलाकार है। मीना के माध्यम से चन्द्रकान्ता ने बचपन में ही माता-पिता की मृत्यु के बाद बच्चों द्वारा झेले गए कष्टों को रेखांकित किया। बचपन में मरते समय मीना की माँ ने उसे बापू को सौंपते हुए कहा, "बच्ची को कोई तकलीफ न हो।" [19] इसलिए बापू ने मीना को फूल की तरह पाला, उसकी मौत के बाद उसके चाचा-चाची ने उसकी शादी बचपन में ही बूढ़े लाला से कर दी। रसीले कंठ की मीना का अतीत बहुत दुखद और तनावपूर्ण था और अनाथ मीना अपने चाचा और चाची के साथ बड़ी हुई लेकिन चाची का अत्याचार दिन ब दिन बढ़ता जा रहा था। "बारह वर्ष की मीना। चाचा- चाची के घर में कपड़े धोती, बर्तन मलती और नन्ही-नन्ही भूलों पर जुबान और हाथों के कोड़े खाती। अंसुवादी आँखों से रात-रात भर अछोर आकाश निहारा करती। नीली चूनर पर आँख मिचौली खेलते सितारों से माँ-बाप को सन्देश भेजती, "तुम्हारी मीनू अकेली है माँ! तुम्हारी मीनू रो रही है बापू! तुम मीनू की आवाज़ नहीं सुनते?" [20]

चाचा-चाची ने मीना की शादी बूढ़े लाला से कर दी है। कुछ दिनों के बाद लाला ने समझदारी दिखाई और बारह वर्षीय मीना को उसकी मौसी के घर वापस भेज दिया। "मीनू

को लौटा रहा हूँ। उसका विवाह कहीं और करा दो। पोती की उम्र की लड़की को घर में न रखूँगा।"[21] लाला ने मीना की चाची को राजी की और पाँच हज़ार रुपये देकर उसकी शादी कहीं और करने के लिए कहा। चाची ने मीना को जगन गुंडे के पल्लू से बाँन्ध दिया। मीना बहुत गिड़गिड़ाती रही और मिन्नतें की, लेकिन चाची ने एक न सुनी। कुछ समय बाद जगन ने अपने दोस्त दलाल मदन सिँह के साथ मिलकर इसे वेश्यालय की मालकिन को बेच दिया। वहाँ मीना पंख कटे पक्षी की तरह छटपटाती रही। भगवान की उस पर दया आ गई और एक संगीत मास्टर की मदद से मीना वहाँ से बाहर आ गईं। मीना का दिल इस संगीत मास्टर के प्रति प्यार से भर गया, लेकिन उनकी पत्नी और दो बच्चों के पिता संगीत मास्टर मीना को आगे समर्थन नहीं दे सके। उन्होंने मीना को अपनी मजबूरी और समस्या से अवगत कराया और उनकी की मदद से ही मीना को जम्मू रेडियो स्टेशन से नियमित अनुबन्ध मिलने लगे। कैलाश के माध्यम से मीना का परिचय ठाकुर प्रताप सिँह से हुआ। पहली ही मुलाकात में मीना ने ठाकुर प्रताप सिँह को प्रभावित कर लिया था। लेकिन मीना का कोई स्वार्थ नहीं था इसलिए उसने रसिक प्रताप को बार-बार समझाया लेकिन वह समझ नहीं पाया। बीजी की मृत्यु के बाद मीना प्रताप के साथ उनके घर आ गईं लेकिन वह बीजी नहीं बन सकीं। जब प्रताप के बच्चे नौकरी के बहाने घर से बाहर रहने लगे तो मीना और प्रताप बिल्कुल अकेले हो गये। मीना ने अपनी ज़िन्दगी में सिर्फ दुख ही दुख देखा था और उसने सदैव प्रताप की सेवा करती रही। अपने पिता की मृत्यु के बाद, सुरेश ने घर बेच दिया और मीना को अपने साथ रहने के लिए कहा।

4.1.5 यहाँ वितस्ता बहती है

उपन्यास 'यहाँ वितस्ता बहती है' में 'गुणी' एक विवेकशील, समझदार और 'गौरी' एक धैर्यशील महिला पात्र है। लेखिका ने देवकी, बिन्ना आदि स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण के माध्यम से समाज में स्त्रियों की विभिन्न स्थितियों को दर्शाया है।

4.1.5.1 गौरी

उपन्यास की मुख्य और उल्लेखनीय महिला पात्र गौरी बहुत मेहनती और धैर्यशील स्त्री है। बलभद्र की बेटी गौरी की मुलाकात राजनाथ से होती है और जब राजनाथ गौरी के पिता के सामने शादी का प्रस्ताव रखते हैं तो बलभद्र प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं। जनता की निन्दा की परवाह किये बिना गौरी ने तुरन्त ही राजनाथ के घर की बागडौर सम्भाल ली। प्रबुद्ध और परिपक्व गौरी एक बड़े परिवार की मालकिन बन जाती है। "गौरी जान गयी थी कि इस घर को अपना बनाने के लिए उसे तमाम कोशिशें करनी होगी। छोटों-बड़ों की सुननी-सहनी होगी। स्वप्नों के आकाश से सच की धरती पर उतरना होगा जो यों भी बड़ी खुरदुरी होती है।" [22]

संयुक्त परिवार की समस्याओं और झगड़ों को सुलझाते-निपटते गौरी खुद को जीना भूल गईं। राजनाथ जानबूझकर गौरी की उपेक्षा नहीं करते, बल्कि धीरे-धीरे गौरी के मन में अस्तित्वहीनता का भाव पैदा करते हैं। वह अपने बच्चों के लिए सुरक्षित भविष्य का आश्वासन चाहती है। "अँधेरा यों जीने का अहम् हिस्सा है, पर इसे खुद पर हावी होने देकर आदमी उस अँधेरे में गुम हो सकता है। जैसा कि उस वक्त आम औरत अपनी नियति मानकर चलती थी। लेकिन उस हद तक अँधेरे में गुम होना भी गौरी को मंजूर न था। बहुत कम पढ़ी-लिखी पर लोकव्यवहार में कुशाग्र बुद्धिवाली गौरी अपने को मारकर जीने की कायल न थी। यही ज़िद शायद उसके ज़िन्दा रहने में आड़े आ गयी। घर-द्वार से तो वह निराश ही रही। वह मान गयी थी कि उस घर में गौरी का आगमन परिवारजनों की रज़ामन्दी से न होकर पति की इच्छा से हुआ था।" [23] गौरी ने अपनी सारी उम्मीदें अपने पति पर लगा रखी हैं, उसमें त्याग, सेवा, सहनशीलता सब कुछ था, और वह अपना सम्पूर्ण अस्तित्व अपने पति के साथ चाहती थी।

4.1.5.2 गुणी

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास के स्त्री पात्र गुणी अत्यंत तीव्र बुद्धि और विवेकशील स्त्री है साथ ही उनमें किसी व्यक्ति को पहचानने और परखने की अद्भुत क्षमता होती है।

शंकरलाल की पत्नी गुणी एक संस्कारी, पतिपरायण स्त्री है, लेकिन उसे किसी अन्य महिला के साथ अवैध सम्बन्ध बनाते देखने के बाद वह छह महीने तक उससे बात नहीं करती है। वह पुरुष की दुर्बलताओं और कमज़ोरियों से भली-भाँति परिचित है। उनके अनुसार पुरुष न केवल शरीर का बल्कि मन का भी भागीदार होता है। गुणी राजनाथ की चारित्रिक गुणों से प्रभावित हुए बिना अपनी छवि बनाने में सफल रहे हैं।

4.1.6 अपने-अपने कोणार्क

'अपने-अपने कोणार्क' की नायिका कुनी एक रक्षणशील परिवार की शिक्षित केन्द्रीय पात्र है। कुनी के माध्यम से लेखिका न केवल उड़ीसा के सामाजिक चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि समग्र रूप से सम्पूर्ण भारत के सामाजिक चरित्र का भी प्रतिनिधित्व करता है। गोपाल राय ने लिखा है- "'अपने-अपने कोणार्क' में चन्द्रकान्ता ने केन्द्रीय पात्र कुनी के रूप में एक ऐसी स्त्री की नियति का चित्रण किया है, जो पढ़ी-लिखी और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी होते हुए भी पारिवारिक मर्यादा के रूढ़ मूल्यों, तिलक-दहेज की बाधाओं, परिवार के प्रति स्वयं ओढ़ी ज़िम्मेदारियों आदि के कारण लगभग बत्तीस वर्ष की उम्र तक एकाकीपन और अनिर्णय की मानसिकता में जी रही है।" [24]

4.1.6.1 कुनी

एक मध्यमवर्गीय परिवार की बेटी कुनी को अनुशासन, गरिमा आदि के मूल्य विरासत में मिले हैं। सरल और सौम्य व्यक्तित्व वाली कुनी अपने रूप-रंग से किसी को भी प्रभावित कर सकती हैं। पहली बार, जब प्रभाकर, कुनी से प्यार करने के बावजूद, उसके पिता की दहेज की माँग के बदले में कुछ नहीं कहता, तो उनका रिश्ता ख़त्म हो जाता है, जो कुनी के अपमान जैसा लगता है। दहेज को लेकर कई बार रिश्ता तय करने की यानी मामला सुलझाने की कोशिशों के बाद भी रिश्ता तय नहीं हो सका तो आखिर कुनी ने फैसला किया कि वह शादी नहीं करेगी। "मन में विरक्ति-सी भर गई। छोड़ो क्या करना है। शादी ज़िन्दगी का आखिरी सच तो नहीं है। और भी बहुत-कुछ करने को पड़ा है।" [25]

कुनी स्थायीय कॉलेज में प्रवक्ता थी और वह अपने घर में आवश्यकता से अधिक जुड़ गई थी। वह अपने बारे में न सोचते हुए ज़्यादा अपने बहनों और भाइयों की ज़रूरतों को पूरा करने पर ध्यान केन्द्रित किया। लेकिन धीरे-धीरे कुनी का व्यवहार सख्त होता गया। "धीरे-धीरे एक अजीब-सी सख्ती मेरे व्यवहार में आती गई। मेरे अन्दर कभी जो पिघलाव रहा था, वह जमकर ग्लेशियर बनता गया और उसकी यख तासीर मेरे चेहरे को भी रूखा और सख्त सपाट बना गई।" [26]

घर-कॉलेज की एकाकी ज़िन्दगी के बीच कुनी की मुलाकात आर्किटेक्ट सिद्धार्थ से होती है और दोनों में प्यार हो जाता है। सिद्धार्थ एक आकर्षक व्यक्तित्व वाले धनी व्यक्ति होने के साथ-साथ एक बेहद दिलचस्प एवं स्पष्टवादी व्यक्ति भी हैं। वह कुनी को पहली बार मिलते ही उसके प्रति अपना प्यार दिखाकर उसे स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है और उनकी सादगी और खूबसूरती देखकर सिद्धार्थ कहते हैं- "कुनी, तुम बहुत भोली हो, बहुत सीधी। आई रियली लव यू। बस, और कोई प्रश्न नहीं!।" [27] लेकिन सिद्धार्थ के अमेरिका चले जाने और उसकी छोटी बहन की शादी हो जाने के बाद वह अकेलापन महसूस करने लगती है। सिद्धार्थ के अमेरिका से न लौटने के कारण वह मानसिक द्वंद्व का शिकार हो जाती है।

सिद्धार्थ कोई स्वार्थी आदमी नहीं है, लेकिन जब विदेश में दुर्घटनावश उसका एक पैर कट जाता है, तो वह उस नर्स से शादी कर लेता है जिसने सिद्धार्थ की सेवा की थी। वह अपने मित्र को पत्र लिखकर अपना अपराध स्वीकार करता है। "मेरी कुनी, तुम्हें अपना कहने का अधिकार मैं शायद खो चुका हूँ। पर मेरे मन ने जो अधिकार लिया वह सहज छूटनेवाला तो नहीं है। ...मैं अपनी तरफ से कोई सफाई पेश नहीं करूँगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिस हद तक हम एक-दूसरे को अपना चुके थे, वहाँ एक-दूसरे की मनस्थिति को समझना मुश्किल नहीं है।" [28] आख़िरकार अपनी मौसी के समझाने पर कुनी डॉ. अनिरुद्ध से शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। शादी के बाद भी कुनी अपने अतीत को भूल नहीं पा रही है लेकिन अब वह अपने लिए जीना चाहती है।

4.1.7 कथा सतीसर

'कथा सतीसर' में कात्या की भूमिका महत्वपूर्ण है। डॉ. कात्या एक विकासशील स्त्री पात्र की भाँति उपन्यास में प्रमुखता और स्वाभाविकता को बनाए रखने के लिए अन्य पात्रों को अपने साथ लेकर उपन्यास में आद्योपान्त एक विशेष भूमिका निभाती हैं। एक और स्त्री पात्र लल्ली भी है, जो उपन्यास के आरम्भ से अन्त तक छोटी-बड़ी घटनाओं में समान रूप से मौजूद है। छोटी सी भूमिका निभाने वाली महिला पात्र राज्ञा एक ऐसी स्त्री की तस्वीर प्रस्तुत करती है जो ससुराल में अपने पति और सास द्वारा प्रताड़ित होती है। हिन्दू, मुस्लिम, कश्मीरी, पाकिस्तानी, सिख, पंजाबी सैनिकों आदि पात्रों के साथ कश्मीर की भीषण अथवा भयावह वास्तविकता का चित्रण किया है। उन्होंने लिखा है- "कई सालते प्रश्न हैं, जिनका उत्तर तलाशना ज़रूरी है, 'कथा सतीसर' में मैंने, मानवीय अधिकार और अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को, पात्रों के माध्यम से उठाया है। एक रची-बसी संस्कृति के विखंडन की त्रासद परिणतियों से जड़े सवाल! मानवीय यातना से जुड़े इन प्रश्नों का उत्तर तलाशते, व्यवस्था का परीक्षण ज़रूरी था, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारणों को खोजना लाज़िमी था।" [29]

4.1.7.1 कात्या

प्रो. केशवनाथ और माता लल्ली के एक सुसंस्कृत परिवार में जन्मी कात्या बचपन से ही प्रखर बुद्धिमति और महत्वाकांक्षी लड़की लगती थी। कात्या ने आगरा में रहकर चिकित्सा की पढ़ाई प्राप्त की और वहाँ रहते हुए भी वह अपनी मातृभूमि कश्मीर को नहीं भूलतीं। नए विचारों के साथ अपनी इच्छाओं को पूरा करने से पहले कात्या शादी के बन्धन में नहीं बन्धना चाहती। डॉक्टर बनने के बाद वह एक स्थानीय अस्पताल में काम करती हैं और अपने कर्तव्यों को पूरी समझ और ईमानदारी से निभाती है और अस्पताल में सभी से उसे प्यार और सम्मान मिलता है। उन दिनों कश्मीर के प्रधान मंत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद ने कात्या के काम और क्षमताओं को देखकर खुशी से उसकी पीठ थपथपाई और उसकी प्रशंसा की- "यह लड़की आप सबका प्यार पा गई है। अगर आप इज़ाज़त दें तो मैं इसे सियासत में लेना चाहूँगा।" [30]

अपने काम और ज़िम्मेदारियों की व्यस्तता में वह अपने भीतर की स्त्री की भावनात्मक स्थिति को भूल चुकी थी। उन्हीं दिनों उन्हें अपने कॉलेज के दोस्त त्रिभुवन से प्यार हो गया, लेकिन पढ़ाई के कारण दोनों को एक-दूसरे से दूर रहना पड़ा। अब कभी-कभी कात्या को त्रिभुवन की याद आती है लेकिन जब वे मिले तो उसे पता चला कि वह शादीशुदा है और तीन बच्चों का पिता भी है। परिवार के लोग कात्या से शादी करने के लिए कहते हैं लेकिन वह इसे टालती रहती है। इसी दौरान कात्या की मुलाकात डॉ. कार्तिकेय से होती है और बाद में यह मुलाकात प्यार में बदल जाती है आखिरकार दोनों शादी कर लेते हैं। "डॉ. कार्तिकेय के साथ जो अबूझ सम्बन्ध बना वह गो कि सहज सहानुभूति से भीगा रिश्ता था, बड़े बेतुके ढंग से कात्या के अन्तर में धँसता चला गया।" [31]

आतंकवादी हमलों के कारण कात्या के परिवार के अन्य सदस्य कश्मीर छोड़कर जम्मू चले जाते हैं। डॉ. कात्या अपने पति के साथ कश्मीर में रहती हैं और इसी दौरान उनके पति का अपहरण हो जाता है तो पत्नी कात्या भी उसके साथ चली जाती हैं। वहाँ कात्या का परिचय आतंकवादी फ़य्याज़ से हुआ और उसी समय कात्या को फ़ैयाज़ के ज़रिए अलगाववाद के कई कारणों की जानकारी मिली। डॉ. कात्या एक माँ की तरह फ़य्याज़ से बन्दूक छोड़ने का अनुरोध करती हैं, लेकिन वह सहमत नहीं होता है। कात्या को भरोसा है कि एक दिन फ़ैयाज़ जैसा तबाह कश्मीरी युवा इसी रास्ते से वापस आएगा। "पता नहीं, मुझे क्यों लग रहा है, कि फ़य्याज़ अगर क्रॉस फायरिंग में मारा न गया, तो एक दिन ज़रूर घर लौट जाएगा।" [32]

डॉ. कात्या न सिर्फ साहसी हैं बल्कि एक भावुक और नरम दिल स्त्री भी हैं। वह एक देशभक्त है जो अपनी मातृभूमि को कभी नहीं छोड़ती। उन्हें विश्वास है कि नई सदी पूरे कश्मीर और मानव जाति के लिए नए सपने और इरादे लेकर आएगी, जो हमें इन सभी यातनाओं से मुक्ति दिलाएगी।

4.1.7.2 लल्ली

लल्ली का हृदय कोमल है और वह अपने पति के प्रति समर्पित होने के साथ-साथ धर्मपरायण एवं धर्मनिष्ठ भी है। 'कथा सतीसर' उपन्यास के लल्ली प्रो. केशवनाथ की पत्नी है और सुन्दर एवं चतुर लल्ली कहानी की शुरुआत से अन्त तक सभी छोटी-बड़ी घटनाओं में घिरी रहती है। संयुक्त परिवार की बुद्धिमान, पारम्परिक और संस्कारी महिला होने के बावजूद, लल्ली अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देने की इच्छुक हैं। अपने पति की मृत्यु के बाद, वह अपने बेटे के पास अमेरिका चली जाती है और उसकी बेटी कात्या कश्मीर में रहती है। लल्ली किसी भी तरह से कश्मीर घाटी को छोड़ना नहीं चाहती है, लेकिन वह कश्मीर में अलगाववादियों के अत्याचारों से लड़ने के लिए अपनी बेटी के साथ जम्मू जाती है। वह अपनी संस्कृति और मातृभूमि से बहुत प्यार करती हैं।

चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों में सैकड़ों पात्रों का चित्रण किया है। उनके द्वारा निभाए गए पात्रों में मुख्य पात्र के अलावा कई बड़े और छोटे पात्र हैं। उनके पहले उपन्यास 'अर्थान्तर' में प्रशान्त नाम के पात्र को एक आत्मकेन्द्रित व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है और उसे लड़कियों में कोई दिलचस्पी नहीं है। अवसरवादी चरित्र का व्यक्ति सत्य शर्मा उपन्यास की नायिका कम्मो के अकेलेपन का फायदा उठाता है। इस उपन्यास के पात्र प्रशान्त का चरित्र सौम्य, निस्वार्थ और चरित्रवान है। 'अर्थान्तर' उपन्यास की महिला पात्र तारा और उषी की चरित्र भूमिकाएँ उल्लेखनीय हैं। आर्थिक असमानताओं और पारिवारिक विसंगतियों के कारण तारा अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अवैध सम्बन्ध स्थापित करती है। निम्न मध्यम वर्ग के पात्र उषी ने अभावों और कठिनाइयों को देखा और भोगा पर एक समझौतावादी ही बनी रही।

'अंतिम साक्ष्य' में मीना की चाची का धन के प्रति लालच झलकता है, जबकि 'बाकी सब खैरियत है' में महिला पात्र ऋता नई पीढ़ी की नए विचारों वाली एक युवा महिला है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास में लेखिका पात्र के ज़रिए कश्मीर की छवि पेश करने में

कामयाब हुए हैं। उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र दिव्या, रूपा आदि का चरित्र-चित्रण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय किया गया है।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की माँ, दादी, गीता आदि पात्र कहानी में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उपन्यास में नासिरा का परिचय सिद्धार्थ द्वारा लिखे गए एक पत्र के माध्यम से किया गया है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में देवकी, मिन्ना आदि कई महत्वपूर्ण पात्र हैं। कष्टमय जीवन में देवकी की इच्छा पूरी नहीं हो पाती और वह मौत की गोद में सो जाती है। मिन्ना को अपना स्वाभिमान से बहुत प्यार है लेकिन ससुराल में उसे कई तरह की परेशानियों एवं समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

चन्द्रकान्ता के प्रसिद्ध उपन्यास 'कथा सतीसर' में और भी पात्र हैं। लेखिका परिस्थिति एवं परिवेश तथा उपयोगी पात्रों का चित्रण करने में सफल रहा है। उन्होंने कश्मीरी समाज में रहने वाले पात्रों के साथ-साथ कश्मीर पर अत्याचार करने वाले कई बाहरी पात्रों का भी चित्रण किया है। उपन्यास में राज़ा, सोना, सरला, खुर्शीद आदि कई महत्वपूर्ण स्त्री पात्र हैं। राज़ा के माध्यम से स्त्रियों पर होने वाले मानसिक उत्पीड़न को दर्शाया गया है। वह एक अत्यधिक महत्वाकांक्षी, दृढ़निश्चयी और स्वाभिमानी स्त्री पात्र का प्रतिनिधित्व करती है। मुस्लिम स्त्री पात्रों में खुर्शीद की चारित्रिक भूमिका अहम है। उन्होंने एक ऐसे किरदार की भूमिका निभाई जो धर्म और जाति से परे सोचती है।

चन्द्रकान्ता के पात्रों का चरित्र हमारे समाज में विद्यमान हैं और उन्होनें समाज की विभिन्न परिस्थितियों और परिवेश से चरित्र को लिया हैं। पात्रों के चरित्र लिंग की परवाह किए बिना किसी व्यक्ति की भावनाओं और पीड़ाओं को दर्शाते हैं। लेखिका ने पात्र को अलग-अलग परिस्थितियों और परिवेश के मुताबिक ढाला है और उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सफल रही हैं। चरित्र-चित्रण में उन्होंने सजीवता, स्वाभाविकता तथा आन्तरिक एवं बाह्य प्रवृत्तियों की निरन्तरता का प्रयोग किया है। इसके साथ ही उन्होंने चरित्र चित्रण में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों शैलियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है।

4.2 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की तलाश: विश्लेषणात्मक अध्ययन

4.2.1 अस्मिता: अर्थ एवं स्वरूप

अस्मिता-अस्मि-यानी 'मैं हूँ'। सामान्यतः अस्मिता का अर्थ है- 'अपने आप की पहचान' यानि 'स्व' की पहचान'। आत्म-सजगता एवं आत्म-चेतना से ही अपनी पहचान बनती है। उपनिषदों में लिखा है- 'आत्मानं विद्धि'। अर्थात 'अपने को जानो'। भगवद्गीता में कहा गया है कि आत्मज्ञान ही सबसे महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट है कि मनुष्य को आत्मज्ञान होना चाहिए कि मनुष्य होने का क्या अर्थ है? 'स्व' को जानने के लिए बोध शक्ति होना आवश्यक है। बोधता से ही मनुष्य 'स्व' तत्व को समझ पाएगा। "अस्मिता एक हद तक सम्बद्धता, सरोकार, लगाव और अपनत्व का प्रश्न भी है। जिसे अंग्रेज़ी में सेंस ऑफ बिलोंगिंग कहा जाता है।" [33]

दरअसल, अस्मिता अनुभव की एक प्रक्रिया है जिसका बोधता या एहसास से ही उसे अपने आप में प्रतिष्ठित होता है। मनुष्य अपनी पहचान लिंग, जाति, समाज, धर्म, राष्ट्र, भाषा, रिश्ते आदि के आधार पर करता है। मनुष्य अपने 'स्व' को समाज में अपने रिश्तों के स्तर पर खोजता है और हर व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसका अपना अस्तित्व निहित होता है। मूलतः समाज में अपने अस्तित्व का अहसास ही अस्तित्व की पहचान है। व्यक्ति अपनी अस्मिता को पहचानकर अपनी ताकत और क्षमता से समाज के विकास में योगदान देता है। "अस्मिता अपनी निजी पहचान के साथ-साथ उस क्षेत्र और समाज की पहचान भी है जो हमारे सन्दर्भ तय करते है। यह सन्दर्भ जाति, वर्ग, रंग, क्षेत्र, भाषा, जेन्डर तथा पेशे इत्यादि के रूप में हमारे अन्तरंग (साइकी) के हिस्से हैं।" [34]

4.2.2 स्त्री अस्मिता: स्वरूप

मनुष्य समाज प्रेमी है और मनुष्य के विकास से ही समाज का विकास होता है। पुरुष और स्त्री दोनों समाज के अभिन्न अंग हैं और केवल पुरुषों के विकास से समाज का विकास नहीं हो सकता, क्योंकि स्त्रियाँ भी इसका एक अभिन्न हिस्सा हैं। व्यक्तित्व केवल मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति में ही जीवित रह सकता है, अर्थात व्यक्तित्व का निर्माण पुरुष सत्ता

या स्त्री सत्ता से नहीं होता है। किसी का शोषण करने या उस पर अत्याचार करने से हमारा 'स्व' तत्व निखरता नहीं पाता और टूटकर बिखर जाता है। पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए सिर्फ पुरुष ही ज़िम्मेदार नहीं हैं, बल्कि समाज भी इसके लिए ज़िम्मेदार है। डॉ. सुदेश बत्रा ने लिखा है- "आत्म-सजगता और आत्म-चेतना का परिणाम है अस्तित्व बोध। बदलते सन्दर्भों में समाज की एक इकाई के रूप में अपने होने के अहसास से ही अस्तित्व की पहचान होती है। इसका तात्पर्य दायित्वहीनता नहीं है, बल्कि अपनी शक्ति और क्षमता को पहचान कर समाज के विकास में एक सक्रिय भूमिका अदा करना है।" [35]

नारी अस्मिता का प्रश्न वर्तमान विचारधारा का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिसने हाशिये पर धकेल दी गई स्त्री को उभारकर केन्द्र में ला खड़ा किया है। स्त्री अस्मिता का यह प्रश्न स्त्री की अस्मिता और उसके जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं पर एक टिप्पणी है, जो परिवार, समाज, धर्म, राजनीति, राष्ट्र, संस्कृति, अर्थव्यवस्था आदि की सम्पूर्ण सीमाओं के पुनर्निर्धारण की माँग करती है। परिसीमाओं के इस निर्धारण को स्त्री की अस्मिता का विकास माना जाता है, जो उसकी अपनी सामाजिक-राजनीतिक सच्चाईयों एवं वास्तविकताओं से गुज़रे बिना सम्भव नहीं है।

बीसवीं सदी के अन्त में स्त्री अस्मिता का प्रश्न अपने चरम सीमा पर पहुँच जाता है। स्त्रियों को आबादी का आधा हिस्सा माने जाने के बावजूद उनके अधिकार वास्तव में समानता तक नहीं पहुँच पाए हैं। स्त्री की अस्मिता और उसके मानवाधिकार उसे समाज में मनुष्य की अवधारणा के रूप में स्थापित करते हैं। लेकिन समाज में व्याप्त समस्याओं और स्त्रियों की दोयम दर्जे की स्थिति के कारण आज भी इन्हें इन्सान के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है।

समाज में महिलाओं का महत्व पुरुषों के बराबर ही है। लेकिन यह पारम्परिक रूढ़ियों की संकीर्ण सीमाओं से बाहर नहीं निकल सका। महादेवी वर्मा इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहती हैं- "पुरुष के समान स्त्री भी कुटुम्भ, समाज, नगर तथा राज्य की विशिष्ट सदस्य

हैं तथा उसकी प्रत्येक क्रिया का प्रतिफल सबके विकास में बढ़ा भी डाल सकती है और उनके मार्ग को प्रशस्त भी कर सकती है। प्रायः पुरुष का जीवन अधिक स्वच्छन्द वातावरण में विशिष्ट व्यक्तियों के संसर्ग द्वारा बनता है और स्त्री का संकीर्ण सीमा में परम्परागत रूढ़ियों से, जिससे न उसे अपने कुटुम्भ से बाहर किसी वस्तु का अनुभव हो और न अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान।" [36]

सामाजिक व्यवस्था में प्रगतिशील परिवर्तन होने के साथ समाज के नियमों में भी परिवर्तन लाना अनिवार्य है। चन्द्रकान्ता ने 'महिला लेखन: अस्मिता की तलाश' शीर्षक लेख में लिखा है- "हमने खुद को बदलने की ज़रूरत ही नहीं समझती। इसी कारण बदलाव के दावों और हकीकतों के बावजूद आज भी नारी की सामाजिक स्थिति में विशेष अन्तर नहीं आ पाया। मध्यकालीन मानसिकता के तहत आज भी स्त्री को सती बनाया जाता है और धर्मगुरु निरंजन देव तीर्थ जैसे शंकराचार्य उसका समर्थन करते हैं। आज भी दहेज की बाली वही चढ़ती है, घर- दफ्तर, खेतों में शोषण का शिकार होती है। अपराधी बच निकलते हैं और निरपराध सूली चढ़ते हैं।" [37]

स्त्रियों में खुद को पहचानने की क्षमता को बढ़ाने की ज़रूरत है। वह अपनी सृजन शक्ति से हमेशा कुछ नया रचने के लिए लालायित एवं उत्सुक रहती हैं। जिस प्रकार पुरुष परिवार का मुखिया होता है, उसी प्रकार स्त्री भी उसका अभिन्न अंग होती है। स्त्री चेतना से ही स्त्री अपनी अस्मिता को समझ सकेगी। डॉ. सुदेश बत्रा लिखा है- "वस्तुतः नारी अस्मिता का प्रश्न अनेक आयामी है। व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में नारी ही उसकी अस्मिता की स्वीकृति है। मुख्य रूप से वह चेतन मन की संकल्पनात्मक भूमिका कम और अवचेतन मन की इच्छाशक्ति अधिक है। एक लम्बी पुरानी स्थापित व्यवस्था को तोड़कर जनसंघर्ष से जुड़ना और कदम कदम पर यथार्थ से मुठभेड़ करना अस्मिता की पहचान का तकाज़ा है।" [38]

4.2.3 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की तलाश

भारतीय साहित्य में स्त्री का स्वरूप समय और परिस्थिति के अनुसार बदलता रहा है। साहित्य की सबसे प्रभावशाली विधा उपन्यास में स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का चित्रण करने

के साथ-साथ समाज के हर पहलुओं को व्यापक एवं सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करता है। भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों ने अपनी सोच और दृष्टिकोण से रचनाओं में स्त्री की पहचान स्थापित किए है। इसमें अधिकतर पुरुष और महिला लेखकों की रचनाओं में स्थापित स्त्री की अस्मिता के बीच में सन्तुलन स्थापित किया गया है।

लेखिका समाज के मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय परिवारों की स्त्रियों से भली-भाँति परिचित हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में रक्षणशील ब्राह्मण समाज के रीति-रिवाज़ों और प्राचीन एवं आधुनिक विचारों में पली-बढ़ी स्त्रियों का स्वाभाविक चित्रण किया है। पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की समस्याएँ अधिक हैं, लेकिन महिला लेखिकाओं ने उन समस्याओं की तह तक जाकर स्त्रियों के दर्द को आवाज़ दी है। चन्द्रकान्ता ने लिखा है- “साहित्य के केन्द्र में मनुष्य और उसकी व्यथा-कथा, उसके संघर्ष, स्वप्न और अम्मीदें होती हैं। यहाँ स्त्री को अलग खाँचे में रखकर उस पर विचार करना सम्भव नहीं क्योंकि वह व्यवस्था के हर अनुषंग से जुड़ी है।” [39]

अपनी रचनाओं के माध्यम से वे समाज के बदलते परिवेश में महिलाओं के संघर्ष, तनाव, अलगाव, कुंठा, अधिकार, शोषण आदि का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है- “स्त्री-विमर्श के झंडे मैंने नहीं गाड़े, पर मेरे उपन्यासों और अधिकांश कहानियों की रीढ़ स्त्रियाँ हैं। मैंने समय और समाज के बदलते परिवेश में, व्यवस्था के भिन्न पक्षों के बीच रखकर स्त्री को संघर्षों, अधिकारों, शोषण और विद्रोहों का परीक्षण किया है।” [40]

उनके उपन्यासों में चरित्रों के बीच साँसारिक स्त्री, शिक्षित स्त्री, शिक्षिता आलोचक स्त्री, श्रमिक स्त्री, विपथगामिनी स्त्री, धर्षिता स्त्री, मानवतावादी स्त्री, यौन सुख में अतृप्त स्त्री, उच्चाभिलाषा में मोहित होकर अपने स्त्रीत्व को नष्ट करने वाली स्त्री आदि का विभिन्न रूप प्रतिफलित हुआ हैं। उनके मुताबिक आज स्त्री अस्मिता के सवालों पर नये सिरे से सोचने की ज़रूरत है और स्त्री को आत्ममंथन की ज़रूरत है। चन्द्रकान्ता की राय में- “आज के इस भूमण्डलीकरण और वीडियो, इंटरनेट के दौर में, जब उपभोक्तावादी रुझानों ने स्वतंत्रता के नाम पर स्त्री को एक वस्तु बना डाला है, मुझे लगता है हमें नए सिरे से स्त्री-अस्मिता के

प्रश्नों पर विचार करने की ज़रूरत है। स्त्रियों को आत्म-मंथन की ज़रूरत है कि वह कैसी स्त्री बनना चाहती है? दूसरी ओर यह भी विचारणीय स्थिति है कि प्रगति के कई सोपान पार करने के बाद भी हम एक अँधेरे युग में जी रहे हैं, जहाँ आज भी पारिवारिक शोषण, बलात्कार, दहेज- दहन और स्त्री-उत्पीड़न की घटनाएँ आए दिन होती रहती है। आतंकवाद ने स्त्री को कई स्तरों पर शोषित-प्रताड़ित किया है।" [41] उनके उपन्यासों में आज के भारत का जो समाजशास्त्रीय मानचित्र मिलता है, उसमें नारी जीवन और उससे जुड़ी विसंगतियों, विडम्बनाओं, असहमतियों, संघर्षों, टकरावों, पीड़ाओं, छटपटाहटों, रुग्णताओं व करुणार्त्र पुकारों आदि का जिक्र हैं।

4.2.3.1 अर्थान्तर

'अर्थान्तर' उपन्यास में कम्मो विवाह और भावनाओं के द्वंद्व में फँसी है। शादी की पहली रात कम्मो की चचेरी बहन के साथ अपने पति के अवैध सम्बन्ध को देखकर उसके जीवन भर के लिए सारी भावनाएँ कड़वी हो गईं, साथ ही कुमारी के सपने, मीठे तनाव, साहसिक जिज्ञासाएँ आदि भी चकनाचूर हो गईं। "इस व्यर्थता के अहसास से मुक्ति पाने के लिए कम्मो ने दूसरे शहर में नौकरी की तलाश आरम्भ की। वह जान गई कि उस परिवेश में कम्मो बनकर वह जी न पाएगी। बर्फ की डली की तरह उसका अस्तित्व गलता जाएगा और वह उस पिघलाव को किसी भी तरह अनहुआ न कर पाएगी।" [42] तभी से उसको नौकरी करने का मन करता है और सास की बगावत के बावजूद भी उसका फैसला नहीं बदलता। उसमें अस्तित्व की खोज की चेतना जाग उठी है। इस उपन्यास के महिला पात्रों के बारे में लेखिका लिखती हैं- "मैनें 'अर्थान्तर' उपन्यास के माध्यम से, तथाकथित संस्कारहीन घरों में घुटते दाम्पत्य और आस्तित्वहीनता की यंत्रणा सहती स्त्री के अंतर्द्वंद्व ही नहीं दिखाए, बल्कि रूढ़ नैतिकता और पुरुष अहं का परीक्षण करती 'कम्मो' के सहज जीवन जीने की आकांक्षा को नया अर्थ देने की कोशिश को भी बोल दिया है।" [43]

4.2.3.2 बाकी सब खैरियत है

जब 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास की बहू पारुल को संगीत के कार्यक्रम के लिए रेडियो स्टेशन में आमंत्रित किया जाता है, तो उसकी सास विरोध करती है। सास न केवल अपनी बहू की पढ़ाई पर तो रोक लगाती है, साथ ही वह अपनी बेटी को भी ज़्यादा पढ़ने नहीं देती है, और वह कहती है- "अभी जो हमारे घर में इज़्जत-आबरू बची है, उसे तो न मिटाओ बहू! बेचारी सरो को तो दस जमात के आगे इसी डर से न पढ़ाया कि कॉलेज में लड़कों के साथ पढ़ना पड़ता। सोचा, मुहल्ले-टोले के लोग बात करेंगे। अब कोई कहे कि बहू गा-बजाकर पैसे कमाने लगी है, तो मैं किस कुएँ में डूबकर जान दूँगी, यह भी तो बता दो!" [44]

पारुल के पिता ने शादी से पहले उनके ससुराल वालों से संगीत के बारे में चर्चा की थी, फिर भी उनकी सास संगीत की शिक्षा पर रोक लगाती हैं। अन्य पात्र निम्मी, पारुल की बेटी ऋता आधुनिक विचारों से प्रभावित हैं। घर की इन सभी पुरानी कुरीतियों एवं अनाचारों से भली-भाँति परिचित होने के कारण ऋता पहले ही समझौते को अस्वीकार कर चुकी है और वह अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है, साथ ही वह अपने जीवन के हर पल को अपने विचारों के मुताबिक जीना चाहती है। निम्मी अपने तरीके से आज़ाद ज़िन्दगी जीना चाहती हैं, लेकिन सास के प्राचीन विचार मेल न खाने के कारण मनमुटाव हो जाता है और वह अपनी जेठानी से साफ कह देती है- "मैंने तो कान पकड़ लिए भाभी! तुम कुछ भी करो, इस जनरेशन गैप को भर नहीं सकतीं। मेरी बात जाने दो, इन लोगों ने तो वहाँ रहकर चार महीनों में ही बेटे का दिल तोड़ दिया, महज़ अपनी ज़ुबान और अपने बर्ताव से। हम अपनी सुख-सुविधा छोड़कर इनके लिए कितना कुछ तो करते थे, लेकिन माँ कभी सन्तुष्ट नहीं हुई। भाभी! यह तुमसे कह रही हूँ। आखिर इन्हें भी समझना चाहिए कि सभी जीना चाहते हैं।" [45]

उपन्यास में प्रत्येक स्त्री की स्थिति को स्पष्ट करते हुए लेखिका लिखती है- "'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास की पारुल घर-परिवार के लिए त्याग करती अपनी इच्छाओं और

सपनों का होम करती है। ऊपर उसकी बेटी ऋता, माँ के त्याग को अर्थ की तुला में हल्का पड़ते देख त्याग की निरर्थकता महसूस करती और कराती है।"[46]

4.2.3.3 ऐलान गली ज़िन्दा है

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास में अरुन्धती और लच्छी चाची प्राचीन पारम्परिक विचारों से प्रभावित हैं। वे हमेशा व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान आदि में व्यस्त रहती है और सास-बहू की कहानियाँ सुनाती रहती हैं और शादी की रस्में भी पारम्परिक तरीके से करना चाहती हैं। अवतारे माता के बारे में कहा जाता है- "खर्च का क्या किया जाए, और किस तरीके किया जाए, यह माई समझ नहीं सकती थी। क्योंकि उसने दो वक्त के साग-भात और शादी-ब्याह के सिवा कोई खर्चा जाना ही नहीं था। पहनने-ओढ़ने को साल में दो मोटी-मोटी साड़ियाँ भी चल जाती थीं। ...वह घर के लिए बनी थी, घर में जन्मी, घर में खटती और अन्ततः घरवालों की सेवा करती, घर में ही मरने को जीवन की महान उपलब्धि समझती थी। और खुश थी, जिस हाल में 'वह' रखे, उसी हाल में।" [47]

इस उपन्यास की रत्नी चाची और दिव्या आधुनिक विचारों से प्रेरित हैं। रत्नी पारम्परिक विचारों के अधीन रहते हुए नये मूल्यों की स्थापना करती है। वह अपने पति और परिवार की मृत्यु की त्रासदी से उबरती है और पुनर्विवाह कर लेती है। दिव्या एक पढ़ी-लिखी और ज़िम्मेदार महिला हैं और वह निर्भीक होकर एक गाइड के रूप में काम करती हैं। वह दूसरी ही मुलाकात में अवतारे को अपने साथ घूमने के लिए आमन्त्रित करती है। अवतारा झिझकती है तो दिव्या कहती है- "मंजू भाभी, आप इन्हें अपने साथ ले आइए न? लगता है, मेरे साथ चलने में इन्हें संकोच हो रहा है। ... मुझे देखो मंजू भाभी, लड़की होकर भी मुझे किसी तरह का संकोच नहीं होता। अकेली ही कहाँ-कहाँ तो घूमना पड़ता है। दरअसल, गाइड का काम करते-करते तो मैं पक्की प्रोफेशनल हो गई हूँ। ...इन प्रोफेशनल लड़की की आँखों में जाने कौन-सा आग्रह था कि अवतारा बिना लगाम खिंचता गया।"[48]

आज महिलाएँ शिक्षा की ओर आकर्षित होने लगी हैं और चारदीवारी से बाहर निकलकर खुली सड़कों पर घूमने लगी हैं। संक्रमण काल में पुरानी पीढ़ी अपनी मान्यताओं से नाखुश है

और नई पीढ़ी नये रीति-रिवाज़ों का अधिक उत्साह से स्वागत करने लगी है। "उस वक्त शहर में स्त्री-शिक्षा का तेज़ी से प्रचार होने लगा था, सो लड़कियाँ घर की चारदीवारी से बाहर खुली सड़कों पर निकलने लगी थीं। घूँघट-पर्दा भी पुरानी पीढ़ी तक ही सीमित हो रहा था। कहाँ वह सिर ढके हब्बा कदल से गुज़रती गुड़ी-मुड़ी लड़कियाँ! अब तो खम ठोंककर कन्धों पर दुपट्टे लहराती लड़कियाँ बीच बाज़ार गुजरने लगी थीं?।" [49]

जब गुणी अपने पति के सुमुखी के साथ अवैध सम्बन्ध देखती है, तो वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाती है। अपने पति को सज़ा देने के लिए वह छह महीने तक उससे बात नहीं करती और उसे शयनकक्ष में घुसने नहीं देती तथा वह खाना भी नौकर के हाथ में भेज देती है और महत्वपूर्ण कार्य बच्चों के माध्यम से ही करवाती है। इतना ही नहीं, वह शंकरलाल पोस्टमास्टेर के द्वारा यह शर्त मंजूर करवाती है कि- "गुणी कभी भी किसी मनपसन्द गोंचेवाले के साथ तफ़रीह के लिए जाये तो उसका पति मुँह पर अँगुली रखे और कान में रूई ठूँसे बैठा रहेगा। गुणी ने यह अधिकार पा लिया है, अब यह उसकी मर्जी कि वह इसका इस्तेमाल करे या न करे।" [50]

इतनी बड़ी बात पर सहमति जताकर गुणी वास्तव में अपना पत्नी धर्म निभा रही है और अपने समान अधिकारों के प्रति पूरी तरह जागरूक होती है। लेखिका कहती है- "गुणी ने उस अप्रत्याशित ढंग से पाये अधिकार का प्रयोग किया या न किया इसका महत्व नहीं, महत्व उसके दर्शन का है। पति-पत्नी तन के भागीदार ही नहीं मन के भी अनुबन्ध से बँधे हैं, इस अनुबन्ध का दोनों ओर से पालन होना लाज़िमी है। पुरुष को स्त्री ने कुछ छूट अपने मन से विवश होकर दी है पर हर बार अग्नि परीक्षा औरत ही दे, इस बात से गुणी सहमत नहीं। गलतियों का प्रायश्चित दोनों को करना होगा, जब जीवन-साथी होने का दावा करते हैं तो ...।" [51]

चन्द्रकान्ता 'ऐलान गली ज़िन्दा है' और 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यासों में स्त्री पात्रों के विषय में लिखती हैं- "'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास हो या 'ऐलान गली ज़िन्दा है', स्त्रियाँ मेरे उपन्यासों की शक्ति हैं। कहीं-कहीं व्यवस्था की जकड़नों में फँसी होने के

बावजूद वे जंजीरें तोड़ने के लिए संघर्ष करती हैं ताकि जीवन भयमुक्त हो और उसे गरिमा मिले। मेरी स्त्री जननी है, घर-परिवार की धुरी, उसे सम्मान से जीने का अधिकार है, अपने अस्तित्व को प्रामाणिक करने के लिए, वह लड़ाई लड़ती है, गलत का विरोध कर आवाज़ उठाती है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' की गौरी हो या 'ऐलान गली ज़िन्दा है' की रत्नी, अपनी आकांक्षाओं को जीने का हौसला रखती हैं।" [52]

4.2.3.4 अंतिम साक्ष्य

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के पति-पत्नी प्राचीन परम्परा पर आधारित है। दो बच्चों के पिता होने के बाद भी बीजी की पति प्रताप सिँह मीना की ओर आकर्षित है। प्रताप सिँह और मीना एक-दूसरे से प्यार करते हैं, हाथ पकड़ने के बाद भी बीजी उस पर गुस्सा होने के बजाय चुप रहकर अपने पति की ज़रूरतों को पूरा करती रहती है। मीना के प्रति अपने पति के आकर्षण के आगे वह स्वयं झुक जाती है। बीजी एक ऐसे परिवार की बेटी हैं जिनके मन पारिवारिक मूल्य एवं संस्कार से भरे हुए हैं। "वह उस घर-परिवार की बेटी थीं, जहाँ न जाने कितनी पीढ़ियों से माँ बेटी को और बेटी अपनी कोखजायी को आदर्श नारियों के शील-संस्कार दिमागों में ठूंस-ठूँसकर भर्ती आई है।" [53] इन संस्कारों के परिणामस्वरूप अन्ततः वह दम घुटने से मर जाती है और अपने पति के विद्रोह भी कुछ नहीं करती है। बीजी जीवन के अन्त तक अपने अस्तित्व की तलाश में आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान में मर जाती है।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना की शादी जगन से होती है और मीना अपने अधेड़ और दुर्व्यवहारी पति को प्यार से स्वीकार करती है। राक्षसी प्रवृत्ति का पति दलाल बन जाता है और पत्नी मीना को वेश्यालय में बेच देता है। कोठेवाली मीना से कहती है- "बिटटो! यहाँ जो एक बार आता है? वापस नहीं जाता। इस घर के दरवाज़ों के सिवा अब सभी दरवाज़े तुम्हारे लिए बन्द हो गए। तुम्हें मदन दलाल ने नहीं बताया?" [54] यहाँ मीना की अपेक्षाएँ निर्दयता से हार स्वीकार करती है।

शिक्षा के कारण 'अंतिम साक्ष्य' के पात्र नीला सिँह में बदलाव देखने को मिलते है। नीला और विकी होटल में एक साथ खाना खाते हैं और परम्परा के अनुसार, एक पुरुष होने

के नाते, जब विकी बिल का भुगतान करने की कोशिश करता है, तो नीला विकी को रोक देती है। स्त्री-पुरुष समानता में विश्वास रखने वाली नीला सिँह कहती हैं- "अरे छोड़ो भी यह स्त्री-पुरुष को खानों में बाँटना। यहाँ तुम ऐसा कोई तीर तो नहीं मार रहे, जो मैं नहीं मार सकती, बल्कि तुमसे ज़्यादा डटकर मैं खा रही हूँ, फिर हम दोनों दोस्त हैं। साथ काम करते हैं। एक जैसा कमाते हैं। इसमें स्त्री-पुरुष का भेद-भाव कहाँ से आ गया?।"

"फिर भी!"

"अच्छा, कह दिया न, अगला निमंत्रण तुम्हारी तरफ से, ठीक है न?"

"अच्छा!" [55] नीला सिँह में आत्मविश्वास पाया जाता है।

'अन्तिम साक्ष्य' उपन्यास के स्त्री पात्रों के सम्बन्ध में लेखिका स्वयं कहती है- "अन्तिम साक्ष्य उपन्यासों में जहाँ बीजी की आस्थाओं का करुण अन्त है, वहीं मीना मौसी की टूटे परिवारों को जोड़ती अक्खड़ जिजीविषा भी है। मेरी स्त्री समर्थ होने की कोशिशों में संघर्षशील है, पर वह पुरुष को कहीं भी अस्वीकार नहीं करती, बस, बराबर में एक सम्मानपूर्ण जगह चाहती है।" [56]

4.2.3.5 यहाँ वितस्ता बहती है

प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री पात्र मिन्ना के माध्यम से एक ऐसी बहू के अस्तित्व की तलाश को दर्शाया गया है जो अपने आत्मसम्मान एवं स्वत्व के लिए बेहद प्रिय है। वह कहीं भी और कभी भी अपनी पहचान या स्वत्व खोना नहीं चाहतीं और वह जानती थी कि वक्त के साथ मूल्यों एवं संस्कारों को बनाए रखना आसान नहीं है। लेकिन वह अन्त तक अपनी स्वत्व की तलाश में भटकती रहती है और अंततः मर जाती है। दूसरा उदाहरण प्रस्तुत उपन्यास में है; विधवा देवकी जिसे बाँझ नाम देकर कलंकित किया जाता था, तो उसने उस कलंक से छुटकारा पाने केलिए राजनाथ की तीसरी पत्नी बनना स्वीकार करती है। वह मातृसुख प्राप्त कर अपना अस्तित्व को कायम रखना चाहती है। देवकी दो बार गर्भवती हुई और उसने एक छोटे बच्चे को जन्म दिया लेकिन दस दिन जीवित रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। देवकी राजनाथ के प्रति कृतज्ञ थी, उन्होंने उसकी अंतिम इच्छा पूरी कर दी।

4.2.3.6 अपने-अपने कोणार्क

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास में चित्रित स्त्री पात्रों के सम्बन्ध में लेखिका स्वयं कहती हैं- "'अपने-अपने कोणार्क' की कुनी, कोणार्क और जगन्नाथ की परम्पराओं को बन्द आँखों से नहीं स्वीकारती, बल्कि समय सन्दर्भों के साथ सही-गलत का निर्णय लेकर अपनी दिशा स्वयं ते कर लेती है। जीवन के सच को तलाश करती मेरी स्त्रियाँ, घर परिवार को तोड़ती नहीं, जोड़ने की कोशिश करती हैं, पर आत्मसम्मान और अधिकारों से समझौता नहीं करती।"[57] कुनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों की साँकलों में इतनी कैद है कि वह मुक्ति की तलाश में छटपटाती रहती है। उसका प्रेमी सिद्धार्थ उसकी मुक्ति की कामना करता है। कुनी बत्तीस वर्षों से अनेक अभिशापों के साथ जी रही है; एक रक्षणशील परिवार में जन्म लेने के शाप, घर की सबसे बड़ी बेटी होने का शाप; कुनी उन ज़िम्मेदारियों से मुक्त होना चाहती है जिनके बोझ से वह दबी हुई है।

4.2.3.7 कथा सतीसर

'कथा सतीसर' उपन्यास की कात्यायनी पढ़-लिखकर डॉक्टर बनती है, लेकिन एक सामान्य महिला की तरह उसका लक्ष्य शादी करना या पैसा कमाना नहीं है। वह सदैव सेवा का व्रत रखती है और स्त्री मोक्ष तथा सेवा का कार्य करती रहती है। ससुराल वालों के अत्याचारों से त्रस्त होकर उसने अपने पति को छोड़कर अपनी बेटी के साथ स्वतंत्र रूप से रहने का फैसला भी किया है।

लेखिका ने प्रस्तुत विषय को बहुत ही बारीकी से बुना है और वे स्त्री अस्मिता और यौन स्वच्छंदतावाद की वकालत करने वालों से कितनी अलग और मार्मिक है। उन्होंने स्त्री अस्मिता की छवि को विकसित रूप में चित्रित करते हुए प्रमुख स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लिखा है- "कथा सतीसर की नीलम हो या राज़ा, प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी रिश्ता बनाए रख मानवीय दृढ़ता का उद्घोष करती हैं, नारेबाजी नहीं करती। मैंने 'कात्या' के रूप में लौह स्त्री की छवि गढ़ी है, जो आपत्तियों-विपत्तियों की आँधी में डटी रहने का साहस

रखती हैं। राज़ा का रूप में टूटकर खड़ी होती स्त्री की द्वन्द्व भारी कथा है, जो मन को द्रवित भी करती हिय और संघर्ष की प्रेरणा भी देती है।"[58]

समाज में पुरुषों और महिलाओं का समान महत्व है, फिर भी पुरुष सत्ता सामाजिक व्यवस्था में प्रचलित रीति-रिवाज़ों और परम्पराओं के माध्यम से अपनी शक्ति को पीसती रहती है। आज स्त्री अपनी पहचान के लिए 'स्व' के तत्व को विकसित करने की आवश्यकता समझती है। यहाँ हर उपन्यास में एक स्त्री अपनी स्वत्व के लिए अपने विचारों से संघर्ष करती है। चर्चित सभी उपन्यासों के माध्यम से लेखिका ने श्रमिक स्त्री, आतंकवाद से पीड़ित स्त्री, रक्षणशील ब्राह्मण परिवार की स्त्री, समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति और अस्तित्व आदि में मानवीय दृष्टिकोण से महिला अस्मिता की तलाश का चित्रण किया है।

4.3 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में चित्रित स्त्री स्वत्व की समस्याओं का विविध आयाम

चन्द्रकान्ता ने अपने बहुचर्चित उपन्यासों के माध्यम से महिलाओं के मानसिक तनावों का चित्रण करने के साथ-साथ नारी-समाज पर दबाव डालने वाली समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने स्त्री जीवन के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साँस्कृतिक पहलुओं पर विचार करते हुए संघर्षपूर्ण जीवन जीने वाली महिलाओं की कष्टदायक समस्याओं का भी उल्लेख किया है। लेखिका की पैनी दृष्टि ने लगभग हर क्षेत्र की समस्याओं और नारी जीवन के बहुआयामी यथार्थ को सजीव ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है।

4.3.1. पारिवारिक समस्याएँ

नारी चेतना पर आधारित अधिकांश उपन्यासों में पारिवारिक जीवन एवं मूल्यों की रक्षा तथा पारिवारिक सम्बन्धों को बनाये रखने में स्त्री की विशेष भूमिका है। आधुनिक समाज में महिलाएँ पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान अपनी शक्ति एवं आत्मविश्वास से खोजना चाहती हैं। चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों में स्त्री के विभिन्न स्वत्वों का अंकन किया है।

परिवार में माता-पिता की मुख्य भूमिका होती है, उनमें से किसी एक की मृत्यु पूरे परिवार की नींव हिला देती है। उपन्यास **अंतिम साक्ष्य** में लेखिका ने बीजी की मृत्यु के बाद परिवार की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है। "माँ की मृत्यु के बाद सुरेश आवारागर्दी की तमाम हदों को लाँघने लगा था। विकी भीड़ में खोए नन्हे बच्चे की तरह बैचेन-रुआसा, बिना खाये-पिये, कभी बुआ, कभी किसी दोस्त के यहाँ पड़ा रहता। कुछ ही दिनों में बाऊ जी को लगा कि उनके घर की ईंट क्या खिसक गई, पूरा घर ही ढहने लगा है।"[59]

कथा सतीसर उपन्यास के माध्यम से चन्द्रकान्ता ने दो पीढ़ियों के व्यावहारिक अन्तर को समझाने का प्रयास किया है। पात्र 'कमलावती' पुरानी पीढ़ी की हैं और वह रीति-रिवाज़ों एवं परम्पराओं का पालन करती हैं, जबकि उसका बेटा 'प्रेम' उसके सामने अपनी पत्नी से छेड़छाड़ करता है तो वह सोचने लगती है- "अपने कोखजने की ऊटपटाँग हरकतों की ज़िम्मेदार बहू को न ठहराकर भी ज़माने से उन्हें शिकायत तो है ही। एक वह वकील साहब की पत्नी है, जो अधबूढ़ी होकर भी ताता तो क्या, सास के सामने भी मुँह उठाकर पति से बात नहीं कर पाती, और एक ये है, जो दूल्हे राजा से फिल्म की शूटिंग देखने का निमंत्रण पाती है, सो भी सास की ऐन नाक के नीचे।" [60]

बाकी सब खैरियत है उपन्यास में, जब माता-पिता कुछ समय के लिए अपने बच्चों से मिलने जाते हैं, तो उन्हें मेहमान जैसा महसूस होता है। "विदेश में रहकर माँ-बाबू को पहली बार लगा कि वे अनु के घर आए हैं और इस घर में उनकी स्थिति एक अतिथि से ज़्यादा नहीं है। अपनों में परायों जैसी दूरी का उन्हें यह पहला अनुभव था और अपनों के पास अतिथियों की तरह सहना कितने दिन संभव होता!"[61]

यहाँ वितस्ता बहती है उपन्यास में इस तथ्य को स्पष्ट किया गया है कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में दहेज प्रथा एक विकराल या भीषण के रूप में धारण कर चुकी है तथा विवाह में दहेज तो देना ही पड़ता है क्योंकि कम दहेज मिलने पर ससुराल वालों लड़की को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट देते है। इसमें नारी शोषण की भयावह स्थिति एवं समस्या का

निरूपण भी परिलिक्षित होती है। आज के बाज़ारवाद में स्त्री एक वस्तु बनकर रह गयी है साथ ही उसे एक भोग्या रूप में देखने की दुष्ट प्रवृत्ति पुरुष-वर्चस्व का ही परिणाम है। पारिवारिक बिखराव या विघटन, अनुशासनहीनता, नारी के प्रति निम्न दृष्टिकोण एवं रवैया, पीढ़ी अन्तराल, भ्रष्टाचार, पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव आदि ऐसे कारण हैं जिनके कारण हमारे परम्परागत अनुशासित मूल्यों में बदलाव आ रहे हैं।

अपने-अपने कोणार्क उपन्यास की बड़ी बेटी कुनी को परिवार में प्रेम और सद्भाव बनाए रखने के लिए घर की पूरी ज़िम्मेदारी उठानी पड़ी। पारिवारिक जीवन के मूल्यों को बनाए रखने हेतु उसे बहुत कुछ सहना पड़ा। उसकी स्थिति ऐसी है कि सही उम्र में शादी न होने के कारण उनकी परिवार चिन्तित हो जाता है और समाज की व्यंग्यपूर्ण नज़रों को सहना पड़ता है।

लेखिका ने विवाह पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों के दुष्प्रभावों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं की भी चर्चा की है। 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास की सीमा और अनुपम, 'अंतिम साक्ष्य' की सुरेश और सरोज, विकी और तनु, 'कथा सतीसर' के नीलू और उदय, 'अपने-अपने कोणार्क' के सिद्धार्थ और कुनी इत्यादि ऐसे प्रेमी युगल हैं जिनके प्यार शादी में परिणित नहीं हो सका।

विवाह पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों के नकारात्मक परिणाम होते हैं और, कई सन्दर्भों में, विवाहेतर सम्बन्ध पारिवारिक जीवन में तनाव का कारण बनते हैं। चर्चित उपन्यासों में ऐसी कई घटनाएँ हैं जिनके माध्यम से अनैतिक सम्बन्धों के दुष्परिणामों का सटीक चित्रण 'अंतिम साक्ष्य' और 'अर्थान्तर' उपन्यासों में दर्शाया गया है। 'बाकी सब खैरियत' उपन्यास में प्रेम और विवाह की समस्याओं के नेपथ्य में स्त्री के जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास में ससुराल से लौटने के बाद तनावपूर्ण जीवन जीने को अभिशप्त स्त्री की समस्याओं का यथार्थपरक अंकन किया गया है और साथ ही इसमें प्यार की असफलता या नाकामी से त्रस्त स्त्री के कारुणिक दुखद कहानी के प्रसंग भी सामने आई है।

4.3.2 सामाजिक समस्याएँ

चन्द्रकान्ता के सात उपन्यासों में युग की ज्वलंत सामाजिक समस्याओं की अभिव्यक्ति तथा सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं के प्रति आस्था की पृष्ठभूमि में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्रियों की सामाजिक जीवन से जुड़े कई प्रकार के तनावों और सामाजिक चेतना की दृष्टि से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक स्त्रियों की जीवन संघर्षों का सटीक उल्लेख किया है।

लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं जैसे स्वतंत्र भारत में अल्पसंख्यकों पर हमले, बदलते सामाजिक मूल्यों की पृष्ठभूमि में उत्पन्न समस्याएँ, पश्चिमी जीवन का समाज पर प्रभाव, जाति-वर्ण व्यवस्था से सम्बन्धित विचारों में परिवर्तन, पारिवारिक सम्बन्धों पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव आदि पर चर्चा की गई है।

'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'कथा सतीसर' आदि उपन्यासों में साम्प्रदायिकता की आग न बुझने से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। देश के विभाजन के बाद कश्मीरी समाज ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेखिका ने सामाजिक रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों के व्यापक प्रभाव पर भी कुशलतापूर्वक प्रकाश डाला है।

अल्पसंख्यकों की समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यासों में लेखिका ने उन ताकतों को बेनकाब करने का प्रयास किया है जो देश में आतंक का साम्राज्य स्थापित कर विभिन्न विवादों का जहर फैला रहे हैं। आतंकवादियों के दर्दनाक अत्याचारों से कई परिवार पीड़ित और शोषित हुए हैं। आतंकवाद इतना भयानक रूप ले चुका था कि वे अपने गिरफ्तार साथियों को छुड़ाने के लिए किसी भी महान व्यक्ति का अपहरण करने का दुस्साहस कर रहे थे। यह सर्वविदित है कि मुफ़्ती मुहम्मद की बेटी डॉ. रूबय्या सैयद को उग्रवादियों ने अपना अगुवा कर लिया था। दिन के उजाले साढ़े तीन बजे एक नीली मारुति वैन से तीन लोग उतरे और उसका अपहरण कर लिया गया। लेखिका ने आतंकवादियों द्वारा

पीड़ित परिवारों की असीम पीड़ा और समस्याओं को चित्रित करने में अपनी ईमानदारी, तटस्थता, प्रतिबद्धता और दक्षता का परिचय दिया है।

यहाँ सामाजिक मूल्यों में बदलाव को लेकर निरूपण एवं प्रतिपादन व्यक्त किया गया है। पश्चिमी प्रभाव के कारण समाज में शराब और शबाब को अपनाया जा रहा है जिसका आधार पैसा है। वर्तमान युग में धन का महत्व बढ़ने से भ्रष्टाचार पनप रहा है, इसलिए यौन अनैतिकता को बढ़ावा मिल रहा है। स्थिति यह है कि- "हज़ारों मुखौटोंवाली भीड़, जहाँ लोग- भ्रष्ट होकर भी भ्रष्टाचार के बारे में चिन्तित होते हैं। सामाजिक ढुलमुल नीतियों और अवसरवादिता के शिकार होकर भी आदर्शों और उसूलों की बात करते अपनी अपनी जबान थकाते हैं। तन की भूख से मुक्ति के लिए आत्मा की स्वतंत्रता का नुस्खा थमाते हैं।" [62]

सामाजिक मूल्यों में बदलाव के कारण स्त्रियाँ एक 'शो पीस' बनती जा रही हैं। पति भी अपनी व्यावसायिक सफलता के लिए उसकी पत्नी से खुद को 'ग्लैमरस' बनाने की उम्मीद रखता है। इसी कारण **अर्थान्तर** उपन्यास की "कम्मो अब सफेद साड़ी नहीं पहनती, अक्सर वार्डरोब में चटख रंग खोलती-टटोलती है। अब उसे भोली और प्यारी नहीं, बिज़नेस मैन की ग्लैमरस वाइफ लगना है। विजय की इमेज को बरकरार रखकर उसकी आर्थिक स्थिति को विज्ञापित करना है। यही वाँछनीय है, क्योंकि विजय यही चाहता हैं।" [63] स्त्री की इस प्रकार का उन्मुक्त व्यवहार अब स्वाभाविक होता जा रहा है और वह इसे जीवन की आवश्यकता समझकर सहजता से स्वीकार कर लेती है।

लेखिका ने अपनी तूलिका क ज़रिये भारतीय समाज पर पश्चिमी जीवन के प्रभाव को उभारा गया है। पश्चिमी प्रभाव के कारण विदेशों में रहने वाले लोगों की सोच में भी बदलाव आया है। पश्चिमी देशों में किशोरावस्था के दौरान लड़के और लड़कियों के बीच आपसी दोस्ती शुरू हो जाती है और वहाँ दोनों को शादी करने की आज़ादी है।

बाकी सब खैरियत है उपन्यास की पारुल अपनी बेटी की शादी को लेकर चिन्तित है, जबकि अमेरिका में रहने वाला उसका देवर बेटी को इस सम्बन्ध में खुली छूट देता है।

अनुपम अपनी भाभी पारुल से साफ कहता है कि वह बेटी इला को एक अच्छे बॉयफ्रेंड से मिलवाना चाहता है ताकि वे एक-दूसरे को अच्छे से समझ सकें। अगर दोनों का स्वभाव मेल खाता है तो उनकी शादी भी कर सकते हैं। यहाँ पारुल को बेटी की शादी की चिन्ता है जबकि अनुपम को अमेरिका में अपनी बेटी की शादी की कोई चिन्ता नहीं है। "पारुल निर्णय में देर करती है, लेकिन अनु तत्काल हल निकालने में माहिर है। बॉयफ्रेंड से मुलाकात! इसमें अनु को खास परेशानी भी नहीं होगी, क्योंकि उसका 'सोशल सर्कल' काफी बड़ा है और धर्म, जाति, देश वगैरह के बन्धन उसने तोड़ दिए हैं, फिर घनिष्ठता, उसके बाद उम्रभर के लिए फैसला! उम्र भर कहना भी शायद ठीक नहीं, क्योंकि वे नारी-स्वातंत्र्य युग में जी रहे हैं- कम-से-कम 'व्यक्ति स्वातंत्र्य' को उन लोगों ने वहाँ स्वीकृति दी है। यहाँ तो कागज़ों पर बहुत-कुछ होता है, पर अमल में जो लाया जाता है, वह सदियों पुराना शोषण!" [64]

पारुल की राय थी कि इला को भारत भेज देना चाहिए क्योंकि वहाँ के माहौल में उसका आज़ाद रहना स्वाभाविक है। अनुपम को लगा कि, "शायद! शायद तुम ठीक कह रही हो। शायद एकाध वर्ष में हमें भारत लौटना ही पड़े, इसी इला के कारण!"

"निम्मी ने सुना, तो अफ़सोस से गर्दन हिलाई। 'शायद' शब्द को अपने कुछेक ठोस शब्दों से जबरदस्ती परे ठेल दिया, "जो लड़कियाँ वहाँ रहती हैं, वे क्या सभी आवारा हो जाती हैं और जो लड़कियाँ यहाँ रहती हैं, वे सभी सीता-सावित्रियाँ बन जाती हैं?" यह हकीकत है कि विदेशों में रहने वाले बच्चे खुद को भारतीय माहौल में ढाल नहीं पाते हैं। जब इला अमेरिका से भारत आई तो मक्खी और मच्छर के काटने से उनके शरीर पर छाले पड़ गए।" [65]

पश्चिमी देशों में बुजुर्गों के लिए 'ओल्ड होम' बनाए गए हैं। जहाँ वे लोग अपनी ही 'कंपनी' में ज़्यादा खुश रहते हैं। जब अनुपम अपने माता-पिता को विदेश ले जाता है तो वे कुछ दिनों तक तो वहाँ खुश रहते हैं, लेकिन जल्द से जल्द भारत लौटना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि वहाँ का आचरण-व्यवहार, रहन-सहन भारत से बिल्कुल अलग है। "अनु माँ-बाबू को बहलाए रखने का भरपूर प्रयत्न करता। वीक एण्ड में किसी भारतीय मित्र के यहाँ

आना-जाना भी होता था। छोटी-मोटी... आयोजित की जातीं। लेकिन माँ का मन वहाँ भी न लगता। विदेश में रहकर भारतीय उन्हें परदेसियों से भी ज़्यादा दूर और अजनबी लगते। वही भिन्न रुचि, बहसों-वार्तालाबों के विविध प्रसंग, जो उनकी समझ में न आते। इसके अलावा जिस बात से उन्हें सख्त परहेज़ था, वह था- स्त्री-पुरुषों में अनौपचारिक खुलापन। बेटे के साथ बहू भी शराब के पैग-पर-पैग चढ़ाती, पराये मर्दों को भी हँसकर पेश करती। माँ स्तब्ध, आश्चर्य चकित और अपमानित देखती रहतीं।" [66]

जब माँ अनु के दोस्त गुप्ता से मिलने गईं तो उसने देखा कि गुप्ता की अमेरिकी पत्नी भी स्वतंत्र विचारों वाली थीं और उनका जीवन भी वैसा ही था। माँ के शब्दों में- "वही ऐलिस, जो सुबह उठकर अपने लिए चाय-नाश्ता बनाती है और पढ़ने चली जाती है। बेचारा गुप्ता अपना खाना आप बना लेता है, बल्कि उसके दोस्त या रिश्तेदार जो भी उससे मिलने आते हैं, उनके लिए भी खुद ही खाना-वाना बना लेता है। ये हैं-उन गोरी चमड़ी वालियों के हाल! एक बार तो हमें भी भुगतना पड़ा।" [67] इस प्रकार 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में लेखिका ने पश्चिमी समाज का चित्रण करते हुए उसकी प्रतिकूल विशेषताओं एवं समस्याओं का सूक्ष्मता से वर्णन किया है।

4.3.3 आर्थिक समस्याएँ

लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आर्थिक असमानता को एक ऐसे तथ्य के रूप में उजागर किया है जो पारिवारिक रिश्तों में असमानता पैदा करता है और दिखाया है कि कैसे आर्थिक असमानता रिश्तों को तोड़ देती है। **ऐलान गली ज़िन्दा है** उपन्यास में आतंकवादियों के अत्याचारों का शिकार बनी महिलाओं के आर्थिक शोषण के कई रूपों का चित्रण उभारा गया है।

बाकी सब खैरियत है उपन्यास में एक ही परिवार के दो भाइयों की आर्थिक स्थिति में अन्तर को व्यक्त करने के साथ धन के कारण होने वाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। विदेश में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देवर अनुपम अपनी भाभी पारुल से कहता है कि वह

उसकी बेटी की शादी तय कर दे तो वह एक 'चेक' भेजेगा। उनकी बातें सुनकर बेटी ऋता अपमानित और व्यथित हो जाती है और सोचती है कि चाचा हमें रोटी के टुकड़े के मोहताज कुत्तों की तरह समझते हैं। एक ही परिवार में आर्थिक असमानता पूरी पारिवारिक रिश्तों में भी असमानता पैदा करती है।

जब पारुल के बेटे ने विदेश में बसे अपने चाचा के बेटों की ज़िन्दगी देखी तो उसे आश्चर्य हुआ है और सोचता है कि उसके पिता उसे घुमाने के लिए कहीं क्यों नहीं ले जाते है। तब पारुल का जवाब आर्थिक अभाव को लेकर जीनेवालों की ओर संवेदना झलकती है और विवश होकर कहती है- "हमारे साथ तुम्हें भी छोटी-छोटी खुशियों को होम देना होगी, यही परम्परा है। पारुल को दुख यही है कि उसका देवर अनुपम सदैव अपनी आर्थिक सम्पन्नता पर गर्व का अनुभव करता रहता है और माता-पिता की सेवा के प्रति तटस्थ रहता है। वह उससे शिकायत भी करती है कि "माँ को बार-बार नोटों की गड्डियाँ दिखाकर तुम माया-महाठगिनी का प्रताप न दिखाते, तो अपनी बीमारी और तमाम शिकायतों के बावजूद वह शायद अपनी नियति को स्वीकार करने की कोशिश करतीं और हमारी सेवाओं को कोई गरिमा मिल जाती, हमारी कोशिशों को कोई अर्थ मिलता।" [68]

पारुल का दृष्टिकोण यह है कि जीवन के संध्याकाल में माता-पिता को धन से कहीं अधिक अपनत्व की आकांक्षा होती है। "पन्द्रह दिन की सेवा का भरपूर सुख उठाकर अनु चला गया। जाते समय नोटों की गड्डियाँ इधर-उधर थमाकर वह खुद को बड़ा ज़िम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ महसूस कर रहा था। तब पारुल उसे याद दिलाना चाहती थी कि वर्ष में केवल पन्द्रह दिन नहीं होते, हज़ारों-हज़ार दिन होते हैं और कभी-कभी एक-एक दिन हज़ारों दिन जैसा लम्बा यातनामय बन जाता है।" [69]

4.3.4 राजनीतिक और आतंकवाद से जुड़ी समस्याएँ

राजनीतिक समस्याओं की अभिव्यक्ति की दृष्टि से चन्द्रकान्ता के उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। आतंकवादियों ने कई राज्यों में साम्प्रदायिक भावनाएँ भड़काईं। परिणामस्वरूप, कई कट्टरपंथियों ने अन्य समुदायों की महिलाओं पर अत्याचार किया है। आतंकवादियों द्वारा

महिलाओं के यौन शोषण की दर्दनाक घटनाओं से कश्मीर के लोग सदमे में थे। चन्द्रकान्ता का जन्म कश्मीर में हुआ था तो उन्होंने ने स्वयं कश्मीरी समाज पर आतंकवाद के प्रभाव को देखा और अनुभव किया, साथ ही अपने उपन्यासों में कश्मीर और आतंकवादियों के जुल्मों का शिकार बने परिवार के दर्द को आवाज़ दी है।

कथा सतीसर में आतंकवाद से त्रस्त स्त्रियों के कटु अनुभवों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। दूसरे समुदाय की महिलाओं की इज्जत लूटने वाले आतंकवादियों की क्रूरता कई घटनाओं से स्पष्ट हो चुकी है। चन्द्रकान्ता ने पूछा, आतंकवाद के लिए कौन ज़िम्मेदार है? इस प्रश्न पर विचार करते हुए अपने शासकों के साथ-साथ आतंकवादियों का समर्थन करने वाले पाकिस्तान की गलत नीतियों को भी ज़िम्मेदार ठहराया है। लेखिका के शब्दों में- "वादी में तो लोगों ने आश्चर्य करना कब का छोड़ दिया था। वहाँ किसी के दरवाज़े पर मेहन्दी का पैकट रखा मिलता, तो घरवाले समझ लेते कि 'जेहादी' उनकी बेटी से विवाह रचना चाहते हैं। वहाँ कमला-विमला के वक्ष काटकर, कान में डेजहोरू की तरह लटकाए जा रहे थे, बांड़ीपुरा के टुक्कर गाँव की युवती को भोगने के बाद, ज़िन्दा ही आरी से दो हिस्सों में काटा जा रहा था।" [70]

लेखिका ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आतंकवाद से जुड़ी समस्याओं का वर्णन हेतु बहुओं और बेटियों की इज्जत लूटने वाले आतंकवादियों की हरकतें, कट्टरवादियों द्वारा दूसरे कौम की स्त्रियों पर अत्याचार, आतंकवादियों के हत्याकांड से भयभीत विस्थापितों की समस्याएँ, निर्वासन का दंश झेलते कश्मीरियों का दर्द, साम्प्रदायिकता की आग न बुझने की समस्या आदि की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

4.3.5 धार्मिक व साँस्कृतिक समस्याएँ

चन्द्रकान्ता प्रगतिशील विचारों का समर्थन करने वाली लेखिका है। 'कथा सतीसर', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'अपने-अपने कोणार्क', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'बाकी सब खैरियत है', 'अंतिम साक्ष्य' और 'अर्थान्तर' में लेखिका ने आमलोगों के जीवन पर धार्मिक

विडम्बनापूर्ण परिवेश के प्रभाव को चित्रित करने का ईमानदार प्रयास किया है। इन उपन्यासों में लेखिका ने कई धार्मिक एवं साँस्कृतिक समस्याओं को अभिव्यक्ति देने के साथ धार्मिक रूढ़ियों में आस्था के कारण सामान्य लोगों के जीवन में उत्पन्न समस्याओं का अंकन भी किया है।

निष्कर्ष

विवेचित उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के विविध आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। अस्मिता की तलाश में स्त्री स्वत्व के विविध रूप होते हैं, जिसमें वह कभी बेटी, माँ, सास, बहू, जेठानी, प्रेमिका, ननंद और भाभी भी बन जाती है। इससे स्पष्ट है कि चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में हमें कई ऐसी स्त्रियों का रूप एवं स्वत्व मिलते हैं जिन्हें हमने वास्तव में देखा और स्वीकार किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. बच्चन सिँह, आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, पृ: ४२.
2. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य एवं अर्थान्तर, पृ: १३१.
3. वही, पृ: १३१.
4. वही, पृ: ९३.
5. वही, पृ: १३३.
6. वही, पृ: १४१.
7. वही, पृ: १३१.
8. वही, पृ: १३९.
9. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: १४.
10. वही, पृ: १२१.
11. वही, पृ: २१.
12. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ६२.
13. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: २५.
14. वही, पृ: ३१-३२.
15. वही, पृ: १२७.
16. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ३९.
17. वही, पृ: ८.
18. वही, पृ: ३७.
19. वही पृ: ११.
20. वही, पृ: ९.
21. वही, पृ: १०.
22. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: ५६.
23. वही, पृ: १०९.

24. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृ: ३७७.

25. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: ५३.

26. वही, पृ: ५३-५४.

27. वही, पृ: १२.

28. वही, पृ: १९१.

29. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ८.

30. वही, पृ: ३०६.

31. वही, पृ: ३०८.

32. वही, पृ: ५६०.

33. डॉ. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर, मेधा बुक, जनवरी २००८, पृ: ३२.

34. राजेन्द्र यादव, हँस, जून २००३, पृ: ९.

35. डॉ. सुदेश बत्रा, नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में, पृ: १.

36. महादेवी वर्मा, शृंगला की कड़ियाँ: पृ: १९.

37. सं. दिनेश नंदिनी डालमिया, संतोष गोयल चन्द्रकान्ता, नारी एक सफर महिला लेखन: अस्मिता की तलाश, पृ: ३२.

38. डॉ. सुदेश बत्रा, नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में, पृ: ९६.

39. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ५८.

40. वही, पृ: ५९.

41. वही, पृ: ५९-६०.

42. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: १२६.

43. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ६०.

44. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ९४.

45. वही, पृ: ४९- ५०.

46. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ६०.

47. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: १४५.

48. वही, पृ: १२७.

49. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: १३५.

50. वही, पृ: १५६.

51. वही, पृ: १५६.

52. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ६०.

53. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ३९.

54. वही, पृ: १५.

55. वही, पृ: ७६.

56. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ६०.

57. वही, पृ: ६०.

58. वही, पृ: ६१.

59. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्षय और अर्थान्तर, पृ: ४६.

60. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: २८४.

61. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ८७.

62. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य अर्थान्तर, पृ: ९०.

63. वही, पृ: १३०.

64. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ३९-४०.

65. वही, पृ: ४१.

66. वही, पृ: ८०-८१.

67. वही, पृ: ८९.

68. वही, पृ: १३१.

69. वही, पृ: २२-२३.

70. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ५३२.